सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुरभि

26 वां अंक
(अप्रैल - सितंबर)
2025

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के द्वारा दिनांक 11.09.2025 को प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I) का कार्यालय, ओडिशा, भुवनेश्वर का निरीक्षण किया गया। माननीय समिति ने कार्यालय में राजभाषा संबंधी किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय को प्रमाण पत्र प्रदान किया।

सुरभि पत्रिका परिवार

परामर्शदाता समिति

श्री सुबु आर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री भरत चंद्र बेहेरा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री भरत चंद्र बेहेरा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

उप संपादक

श्री उपेन्द्र नाथ दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सह संपादक

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक
श्री संजीव कुमार यादव
वरिष्ठ अनुवादक
श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के द्वारा कार्यालय के राजभाषा संबंधी निरीक्षण से संबंधित झलकियां

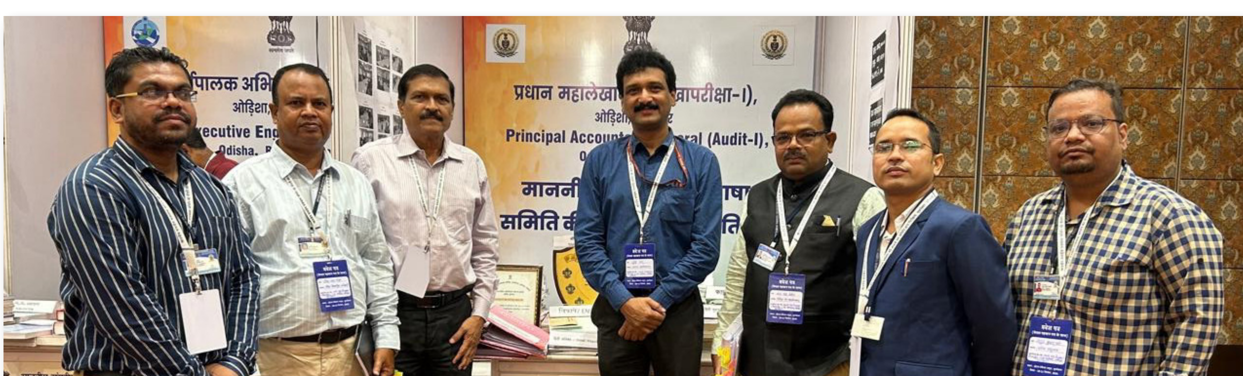

संदेश

श्री सुबु आर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

इस कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 26वें अंक का प्रकाशन अत्यधिक प्रसन्नता और गर्व का विषय है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं समर्पण के भाव को दर्शाती है।

'सुरभि' केवल एक हिंदी पत्रिका ही नहीं अपितु इस कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के विचारों एवं हृदय के मनोभावों को प्रकट करने का एक माध्यम भी है। पूर्व अंक की भांति इस अंक में भी कार्यालय के कार्मिकों ने पत्रिका के प्रकाशन में उनकी रचनाओं के रूप में सराहनीय योगदान द्वारा इस परंपरा को बनाए रखने का प्रयास किया है।

हिंदी पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना रचनात्मक कौशल दिखाने का अवसर भी प्रदान करती है। यह हम सब का संवैधानिक दायित्व एवं कर्तव्य है कि हम सब मिलकर कार्यालय के काम- काज में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की प्रवृत्ति को विकसित करके राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान दें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का यह अंक कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति एक सकारात्मक सोच को विकसित करेगा एवं कार्यालय में राजभाषा हिंदी की प्रगति में अहम योगदान देगा। 'सुरभि' के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(सुबु आर)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री भरत चंद्र बेहेरा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान के रूप में अर्ध-वार्षिक गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 26वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ क्योंकि उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति के कारण ही इस पत्रिका का प्रकाशन सफल हो सका है।

राजभाषा हिंदी का सम्मान करना एवं कार्यालय के दैनिक काम काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी एवं संवैधानिक कर्तव्य है। कार्यालय की यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं कार्यालय के कार्मिको में हिंदी में काम काज हेतु प्रोत्साहन को समर्पित है। यह अत्यंत गर्व का विषय है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम कार्यालय में हिंदी के प्रति मान-सम्मान एवं गौरव के वातावरण का सृजन करने में सफल हुए है।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी राजभाषा के प्रचार- प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी एवं पाठकों के ज्ञान- कोष में भी बढ़ोत्तरी करेगी।

'सुरभि' की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(भरत चंद्र बेहेरा)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री बनोत राकेश नाईक
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-I)

कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सुरभि' के 26वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। पूर्व अंकों की भांति इस अंक में भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पत्रिका के माध्यम से अपनी प्रतिभा एवं उनकी राजभाषा हिंदी में बढती रूचि और प्रेम को कहानी, कविता और लेख के माध्यम से प्रेमपूर्वक दर्शाया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं ने हमेशा से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके माध्यम से ही विभागीय प्रतिभाएं सामने आ पाती हैं तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार होता है। हमारी हिंदी ई-पत्रिका 'सुरभि' विगत कई वर्षो से इस महत्वपूर्ण कार्य में निर्बाध योगदान देती आ रही है।

मैं पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल, सभी लेखकों और योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई और धन्यवाद देता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(बनोत राकेश नाईक)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-I)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री विमलेश कुमार

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के (26वें) अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन गृह हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालय के काम काज को राजभाषा हिंदी में करने का प्रोत्साहन मिलता है। हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उदेश्य केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण एवं कार्यालयीन काम काज में हिंदी के प्रति रूचि पैदा करना है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका 'सुरभि' के माध्यम से कार्यालय में एक ऐसा वातावरण तैयार हो रहा है जिससे कार्यालय के कार्मिक राजभाषा हिंदी के प्रति प्रोत्साहित हो रहे हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(विमलेश कुमार)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री नल्लमोतु बालकृष्णा

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-IV)

अर्धवार्षिक गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 26 वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। हमारे कार्यालय के रचनाकार अपने साहित्यिक चिंतन एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से ना केवल पत्रिका को निरंतर नया आयाम देने में सक्षम हुए हैं बल्कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में भी सफल हुए हैं।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। उनके अमूल्य योगदान के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं था। रचनाओं में विविधता लिए हुए यह अंक इस पत्रिका को समृद्धि प्रदान करता है।

मैं पत्रिका के पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी नए आयाम स्थापित करते हुए पाठकों की साहित्यिक जिज्ञासाओं की पूर्ति के साथ साथ उनके ज्ञान में वृद्धि करती रहेगी।

बालकृष्णा

(नल्लमोतु बालकृष्णा)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-IV)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री अशोक कुमार पंडा
कल्याण अधिकारी

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के 26 वें अंक का प्रकाशन इस कार्यालय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है।

'सुरभि' पत्रिका इस कार्यालय की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। सुरभि के प्रकाशन के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने अनुभव, मनोभाव, एवं विचारों को साझा करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलता है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन हेतु सपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि पत्रिका इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी। पत्रिका के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

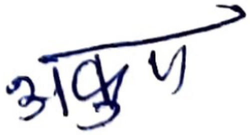

(श्री अशोक कुमार पंडा)
कल्याण अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	बंधुआ मजदूरों का पुनर्जन्म	श्री विमलेश कुमार, *उप महालेखाकार*	1
2	ओड़िया भाषा का उद्भव, विकास और इतिहास	श्रीमती तुलसी वर्मा	3
3	ओडिशा: इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम	श्रीमती रानी गिरि	6
4	ऑपरेशन सिंदूर: अडिग भारत की शौर्यगाथा और धैर्य की सीमा पर शक्ति का उदय	अमित कुमार प्रधान, *वरिष्ठ लेखापरीक्षक*	8
5	"डाबरखोल जलप्रपात" का सफर	श्रीमती सबिता साहू, *वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी*	12
6	विदाई सम्बर्धना - श्री जशोबंत मोहांती, पर्यवेक्षक	श्री सय्यद शैबान फ़ैज़ल, लेखापरीक्षक	13
7	सम्मान के दो किनारे	श्रीमती शादमा ज़हीन	14
8	विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरती हिंदी	श्री राहुल कुमार वर्मा, *कनि.अनुवादक*	15
9	शांति निकेतन: एक अनाम कस्बे से विश्व धरोहर बनने तक का सफ़र	श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्रा	18
10	श्री जगन्नाथ धाम पुरी और कुछ दर्शनीय मंदिरों के दर्शन	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य, *पर्यवेक्षक*	20
11	सबका साथ सबका विकास	श्रीमती ममता देवी, *सहायक पर्यवेक्षक*	22
12	सिंड्रेला की कहानी	श्री आयुष्मान वर्मा	25
13	हिंदी पॉडकास्ट: एक नया युग, एक नई आवाज	श्री पुरुषोत्तम गिरि, *वरिष्ठ अनुवादक*	27
14	हिंदी से ही हर सवेरा है	श्री सिद्धार्थ गिरि	29
15	चिड़िया	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य, *पर्यवेक्षक*	31
16	कर्म की उपादेयता	श्रीमती नीलम देवी	33
17	भारत में चुनावी सुधार की आवश्यकता एवं महत्व	श्री संजीव कुमार यादव, *वरिष्ठ अनुवादक*	35

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

आपके पत्र

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय, चेन्नै
Office of the Principal Director of Commercial Audit, Chennai
इंडियन ऑयल भवन, स्तर -2, 139, महात्मा गाँधी मार्ग, चेन्नै - 600034
Indian Oil Bhavan, Level- 2, 139, Mahatma Gandhi Road, Chennai - 600034
Tel: 044-28330147 Fax: 044-28330142/145, e-mail: pdcachennai@cag.gov.in

राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-I) / Rajbhasha Section (Audit-I)
आवक सं / Inward Dy. No. 322
दिनांक 06/06/2025

सं.प्रनिवलेप/चेन्नै/7-46/2025-26/133 दिनांक: 30.05.2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
भुवनेश्वर, उड़ीसा-751001

विषय: राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" की प्राप्ति के संबंध में।
संदर्भ: संख्या राजभाषा अनुभाग/07/सुरभि/2024-25/314, दिनांक 21.05.2025

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "सुरभि" का 25वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बहुत-बहुत साधुवाद।

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक है। श्री राहुल कुमार वर्मा की रचना "प्राचीन लिंगराज मंदिर" में लिंगराज मंदिर का अद्भुत चित्रण किया गया है। अन्य रचना जैसे डिजिटल अर्थव्यवस्था:एक समताकारी अथवा आर्थिक असमता का स्त्रोत, भारत की सौर ऊर्जा क्रांति:नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी आदि ज्ञानवर्धक है। "कितना बदल गया ज़माना", "विकास या विनाश" जैसी कविताएँ उच्च कोटी की है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आपका यह योगदान सराहनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(यह उप निदेशक (प्रशासन) के अनुमोदन से जारी किया जाता है)

भवदीय
30/05/25
सहायक निदेशक(राभा)

राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-I) / Rajbhasha Section (Audit-I)
आवक सं / Inward Dy. No. 300
दिनांक 28.05.2025

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/118 दिनांक/Dated: 26.05.2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
ओड़िशा : भुवनेश्वर

विषय - कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'सुरभि' के 25 वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका 'सुरभि' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्मकता में उतरोतर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-I) / Rajbhasha Section (Audit-I)
आवक सं / Inward Dy. No. 308
दिनांक 2/06/2025
398

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), डीएफ-ब्लॉक,
सेक्टर-1
साल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्याः- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/27 28 MAY 2025 दिनांकः- 28/05/2025
No.H.C/P.P/

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिशा,
भुवनेश्वर- 751001
To,
The Senior Audit Officer/ Administration
Office of the Pr. Accountant General (Audit-I),
Odisha, Bhubaneswar-751001

विषय: **कार्यालयीन हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के 25वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'सुरभि' के 25वें अंक की ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं-प्राचीन लिंगराज मंदिर, नारी का आदर, कबीरदास, सनातन धर्म तथा बहता जल आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
28.05.25
सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

का.म-I. (ले.प-I) साधारण
OM-II (Audit-I) Ordinary Dy. No.
3281
05/08/25

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑडिट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

राजभाषा अनुभाग (लेखापरीक्षा-I) / Rajbhasha Section (Audit-I)
आवक सं / Inward Dy. No. 475
दिनांक 18/08/25

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/21। दिनांक: 16.07.2025

Sr.DAG (Admn)Sectt. Others Dy. No. 381
Date: 06/08/2025

18 JUL 2025

सेवा में
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
ओडिशा, भुवनेश्वर – 751001.

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के 25वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 21.05.2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका **"सुरभि"** के 25वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री निधि प्रिया का "छद्म नारीवाद: एक विचारणीय विषय", श्रीमती दीपिका चटर्जी का "कबीरदास", श्री अमित कुमार प्रधान का "18वां प्रवासी भारतीय सम्मेलन 2025" एवं श्री पुरुषोत्तम गिरी का "दिव्यदर्शी पथप्रदर्शक: सर रतन टाटा (लोकोपकार एवं समाज कल्याण)" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री मनीष कुमार की "कितना बदल गया ज़माना" एवं श्री आनंद सिंह कोस्टा की "जिन्दगी" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

Sr. AO/ Hindi
06/08/25

05 AUG 2025
O/o. the A.G.(Audit-I)Odisha,Bhubaneswar

पूजा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

बंधुआ मजदूरों का पुनर्जन्म

श्री विमलेश कुमार
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

हमारा देश अत्यंत प्राचीन और विविधताओं वाला देश है। प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, आचार-विचार एवं व्यावहारिक विविधताओं से भरा-पड़ा है। ऋषि-मुनियों की पावन भूमि पर बाहर से आने वाले आक्रमणकारी भी यहाँ की सभ्यता-संस्कृति और समृद्धि को देखकर यहाँ के होकर रह गए।

एक समय ऐसा भी था जब हमारा देश अत्यंत समृद्ध था और बाहर के आक्रान्ता इसके ऊपर अपनी ललचाई नजरों से देखा करते थे और कहा जाता था कि भारत सोने की चिड़िया है। यही वह दौर था जब बाहर के आक्रांताओं ने आकर यहाँ भारी लूट-मार मचाई और भारत को आर्थिक रूप से विपन्न बना दिया विशेषकर अंग्रेजों के दौर में यहाँ का विशेष आर्थिक शोषण हुआ। उसके कारण यहाँ आर्थिक विषमता की खाई बहुत चौड़ी हो गई। एक तरफ धनी जमींदारों और सामंतो के हाथ में आर्थिक समृद्धि केंद्रित थी तो दूसरी ओर आर्थिक विपन्नता झेल रहे किसानों और मजदूरों को अपने जीवन यापन के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ रहा था। इस कठिन दौर में गरीब मजदूरों को अपना पेट भरने के लिए भी जमींदारों और सामंतो की दया पर निर्भर रहना पड़ता था। धनी सामंत और जमींदार गरीब मजदूरों का जमकर शोषण किया करते थे। सिर्फ पेट भर खाना खिलाकर उनसे दिनभर मजदूरी करवाई जाती थी। उसमें से कुछ लोग तो मामूली आर्थिक सहायता देकर ही उनको जीवन भर के लिए अपनी सेवा में लगा लेते थे। ऐसे लोगो को 'बंधुआ मजदूर' कहा जाने लगा। उनकी गरीबी की ऐसी अवस्था थी कि वे कभी सामंतो के ऋण से मुक्त नहीं हो पाते थे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनकी सेवा में लगे रहते थे। परन्तु इतनी कठिनाई झेलने के बाद भी वे आशा के साथ अपना जीवन जी रहे थे। वे यही सोचते कि आज नहीं तो कल मेरी संतति इस परिस्थिति से बाहर जरुर निकलेगी। उनकी आशाओं का आधार था उनकी आने वाली पीढ़ी क्योंकि चाहे कितनी भी कठिनाई और दुश्वारी हो उन्होंने अपनी संतति (पीढ़ी) को आगे बढाया अर्थात बच्चे पैदा करना और उनको पाल-पोस के बड़ा करने के अपने दायित्व का निर्वाह करना नहीं छोड़ा। उसका परिणाम ये हुआ कि एक पीढ़ी जब थक जाती तो दूसरी नई पीढ़ी आकर सिर्फ सामंतो और जमींदारों की ही सेवा नहीं करती थी बल्कि अपने बाप-दादा की भी देखभाल करते थे।

उन लोगो का अपनी संतति को आगे बढ़ाते रहने का सुखद परिणाम आज दिखाई दे रहा है। आज हमारा देश समृद्धि की ओर बढ़ रहा है दुनिया की चौथी आर्थिक महाशक्ति बन गया है। आज कोई ऐसा आदमी नहीं है जो सिर्फ पेट–भात पर किसी की सेवा के लिए विवश हो। भूखे पेट सोने की विवशता अब कहीं नहीं रही। आज गरीब से गरीब भी अपना पेट भर सकता है और आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप उपलब्ध सुख- सुविधाओं का आनंद ले सकता है। आज देश में कहीं भी कोई भी बंधुआ- मजदूर बनने के लिए विवश नहीं है। बंधुआ मजदूरी आज इतिहास की बात रह गई है।

भारत की सभ्यता संस्कृति में एक बड़ा सिद्धांत प्रचलित है जिसको 'पुनर्जन्म' का सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार सभी जीवों का मृत्यु के पश्चात् किसी न किसी जीव के रूप में पुनर्जन्म होता है। आज के समाज पर नजर डालने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि बंधुआ मजदूरों का भी पुनर्जन्म होने

लगा है। आधुनिक समाज में अब बंधुआ मजदूर फटे-हाल और भूखे नंगे नहीं हैं बल्कि सुख- समृद्धि-ज्ञान- विज्ञान से भरपूर हैं परंतु उनका जीवन भी सिर्फ दूसरों के लिए ही समर्पित है। जैसे बंधुआ मजदूरों का जीवन अपने मालिकों के लिए था उसी तरह आधुनिक बंधुआ मजदूरों का जीवन भी अपने मालिकों के लिए ही है। पहले इनका मालिक होता था जमींदार और सामंत किन्तु आज इनका मालिक है बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिसमें हजारों पढ़े-लिखे युवा दिन रात अपनी सेवा दे रहे है। उनका अधिकांश समय मालिकों की सेवा में बीत रहा है चाहे आई.टी कंपनी हो इंजिनियरिंग कंपनी हो या कोई ओर। मालिक भी अपने देश का नही है बल्कि वो या तो अमेरिकी है या यूरोप का है या अंग्रेज है या कोई अरब इत्यादि है।

मालिकों की सेवा में आज के बंधुआ मजदूर तत्पर रहते हैं और बदले में उनको मोटा वेतन मिलता है- वो भी डॉलर में। भौतिक सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं होती इनके जीवन में परन्तु सबसे बड़ी समस्या है कि इनका जीवन ही कंपनियों के लिए होता है। एक बार सेवा में लग गए तो फिर इनको सिर्फ दो चीजें ही दिखाई देती है – कैरियर और कंपनी बाकी सभी चीजें गौण हो जाती हैं – अपनी सुख-शांति, परिवार की चिंता अपने भविष्य की चिंता कुछ इनके लिए महत्त्व नहीं रखता। भविष्य से यहाँ तात्पर्य है अपनी संतान/संतति अर्थात् आने वाली अगली पीढ़ी।

कैरियर और कंपनी की चिंता करते-करते अपने दायित्वों को बिल्कुल भूल जाते हैं।

अपने प्रति दायित्व, परिवार के प्रति दायित्व, समाज के प्रति दायित्व सब कुछ पीछे चला जाता है। अगर याद रहती है तो सिर्फ सुख-सुविधा और उनका अपना-अपना स्वार्थ जिसमें उनको कोई व्यवधान पसंद नहीं। यह एक चिंता जनक स्थिति है जिसमें आधुनिक बंधुआ मजदूरों की हालत अपने पूर्वज बंधुआ मजदूरों से भी बदतर लगती है क्योंकि उनको तो कम से कम अपनी संततियों से सुन्दर भविष्य की आशा थी जबकि आज के बंधुआ मजदूर तो कंपनी और कैरियर में इतने खो जाते है कि अपनी संतति उनको व्यर्थ का झंझट लगता है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश भी एक दिन बूढ़े लोगों की फौज से भर जायेगा और आज जिस तरह हम इस बात पर गर्व करतें है कि हमारा देश युवाओं का देश है वह एक इतिहास बन जाएगा।

काश हमारी युवा पीढ़ी कंपनी–कैरियर और अपने दायित्वों के बीच उचित संतुलन बनाने के लिए सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़े और अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए तत्पर हो ताकि देश और समाज का भविष्य भी आगे आने वाली पीढ़ी के हाथों में सुरक्षित हो सके।

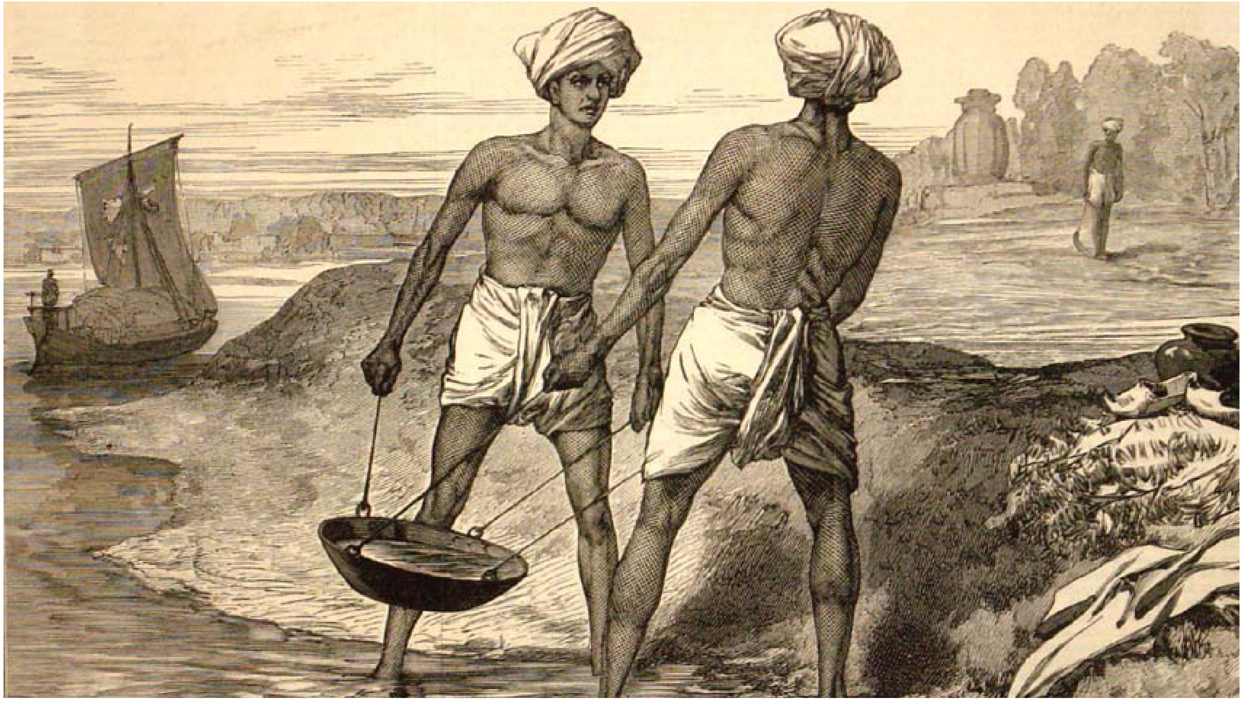

ओड़िया भाषा का उद्भव, विकास और इतिहास

श्रीमती तुलसी वर्मा

पत्नी : श्री राहुल कुमार वर्मा, कनि.अनुवादक

भाषा –

भाषा, मनुष्यों द्वारा अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का एक साधन है। यह मौखिक, लिखित या सांकेतिक प्रतीकों की एक प्रणाली है, जिसके माध्यम से एक सामाजिक समूह के सदस्य संवाद करते हैं और अपनी संस्कृति में भागीदार बनते हैं।

भारत एक बहुभाषिक देश –

भारत एक बहुभाषिक देश है जिसमें विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, और जातियों का समावेश है। यह देश अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक विविधता के लिए विख्यात है, और यही भाषाओं की विविधता इसकी भौगोलिक और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती है। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, जैसे हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, मराठी, बंगाली, ओड़िया, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, और अन्य। यहाँ तक कि भारत की संविधानिक भाषा भी 22 भारतीय भाषाओं में से एक है। भारतीय भाषाएं लोकतांत्रिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन भाषाओं में हमें विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता का पता चलता है। वे भाषाएं न केवल एक व्यक्ति के विचारों को व्यक्त करने का साधन होती हैं, बल्कि उसकी भावनाओं, भावों, और संवेदनाओं को समझने में भी मदद करती हैं हर भाषा अपनी खासियत के साथ भारतीय साहित्य को व्यक्त करती है। भारत में भाषाओं की समृद्धि और विविधता अद्वितीय है, और इसका एक महत्वपूर्ण पहलू उसके विभिन्न लोगों और समुदायों के बीच एकता और सांघार्मिकता को संवारने में है। भारतीय भाषाएं विविधता का प्रतीक हैं और वे हमें एक-दूसरे के साथ साझा जीवन की संप्रेषणीयता और संवाद की महत्ता को सिखाती हैं। इस प्रकार, भारत एक बहुभाषिक देश है जो भाषाओं के समृद्ध और विविध धरोहर के साथ एक उदाहरण है।

भारत की एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में ओड़िया भाषा-

ओड़िया भारत के ओड़िशा प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा है। ओड़िया भाषा ने भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त की है। यह भाषा ओड़िशा राज्य सरकार की राजभाषा भी हैं। ओड़िशा की भाषा और जाति दोनों ही अर्थो में 'उड़िया' शब्द का प्रयोग होता है, किंतु वास्तव में ठीक रूप ओड़िआ होना चाहिए। इसकी व्युत्पत्ति का विकासक्रम कुछ विद्वान् इस प्रकार मानते हैं : ओड्रविषय, ओड्रविष, ओडिष, आड़िषा या ओड़िशा। सबसे पहले भरत के नाट्यशास्त्र में उड्रविभाषा का उल्लेख मिलता है।

ओड़िया भाषा की उत्पत्ति –

भाषातात्विक दृष्टि से उड़िया भाषा में आर्य, द्रविड़ और मुंडारी भाषाओं के संमिश्रित रूपों का पता चलता है, किंतु आज की उड़िया भाषा का मुख्य आधार भारतीय आर्यभाषा है। साथ ही साथ इसमें संथाली, मुंडारी, शबरी, आदि मुंडारी वर्ग की भाषाओं के और औराँव, कुई (कंधी) तेलुगु आदि द्रविड़ वर्ग की भाषाओं के लक्षण भी पाए जाते हैं। उड़िया भारतीय भाषा परिवार के पूर्व समूह से सम्बद्ध है और इसकी उत्पत्ति अर्द्ध मागधी प्राकृत से हुई है। कहा जाता है कि 10वीं शताब्दी में यह अलग भाषा के रूप में उभरी। इसके बाद की सदियों में यह मुख्यतः द्रविड़ भाषाओं, अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के सम्पर्क में आई। तमिल, तेलुगु, मराठी, फ़ारसी, अरबी, तुर्की, फ़्रेंच, पुर्तग़ाली, अंग्रेज़ी और संस्कृत

के गृहीत शब्दों से इसकी शब्दावली समृद्ध हुई।

ओड़िआ एक पूर्वी इंडो-आर्य भाषा होने के नाते इंडो-आर्य भाषा परिवार का सदस्य है। इसे पूर्व मागधी नामक प्राकृत भाषा का वंशधर माना जाता जिसे कि 1500 साल पहले पूर्व भारत में प्रयोग किया जाता था। इस का आधुनिक बांग्ला, मैथिली, नेपाली एवं असमिया भाषाओं से निकट संबंध है। अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं के मुकाबले में ओड़िआ, पार्सी भाषा द्वारा सबसे कम प्रभावित हुई है। लिखित ओड़िआ भाषा का प्राचीनतम उदाहरण मादला पांजि (पुरी के जगन्नाथ मंदिर की पंजिका) में मिलता है जिन्हे ताड़ के पत्तों पर लिखा गया था।

ओड़िया लिपि एवं वर्णमाला –

ओड़िया भाषा हेतु प्रयुक्त होने वाली लिपि को उड़िया लिपि के नाम से जाना जाता है। यह लिपि बाएं से दाएं तरफ लिखी जाती है। इस लिपि का विकास भी नागरी लिपि के समान ही ब्राह्मी लिपि से हुआ है। अंतर केवल इतना है कि नागरी लिपि की ऊपर की सीधी रेखा ओड़िआ लिपि में वर्तुल हो जाती है और लिपि के मुख्य अंश की अपेक्षा अधिक जगह घेर लेती है। इसे भारत की सबसे सुंदर लिपियों में से एक माना जाता है। विद्वानों का कहना है कि ओड़िआ में पहले तालपत्र पर लौह लेखनी से लिखने की रीति प्रचलित थी और सीधी रेखा खींचने में तालपत्र के कट जाने का डर था। अत: सीधी रेखा के बदले वर्तुल रेखा दी जाने लगी और ओड़िआ लिपि का क्रमश: आधुनिक रूप आने लगा। आधुनिक उड़िया लिपि में कुल 52 अक्षरों का उपयोग किया जाता है। इस लिपि में स्वरों एवं व्यंजनों की संख्या क्रमश 11 और 41 है।

ओड़िया भाषा का कालक्रम:-

सम्पूर्ण ओड़िआ भाषा को कालक्रम की दृष्टी से निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है -

* प्राचीन ओड़िआ (500-600 ईसवी)
* प्रारम्भिक मध्य ओड़िआ (1300-1500 ईसवी),
* मध्य ओड़िआ (1500-1700 ईसवी)
* नूतन मध्य ओड़िआ (1700-1850 ईसवी)
* आधुनिक ओड़िआ (1850- वर्तमान)

ओड़िआ एक पूर्वी इंडो-आर्य भाषा होने के नाते इंडो-आर्य भाषा परिवार का सदस्य है। इसे पूर्व मागधी नामक प्राकृत भाषा का वंशधर माना जाता जिसे कि 1500 साल पहले पूर्व भारत में प्रयोग किया जाता था। इस का आधुनिक बांग्ला, मैथिली, नेपाली एवं असमिया भाषाओं से निकट संबंध है। अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं के मुकाबले में ओड़िआ, पार्सी भाषा द्वारा सबसे कम प्रभावित हुई है। लिखित ओड़िआ भाषा का प्राचीनतम उदाहरण मादला पांजि (पुरी के जगन्नाथ मंदिर की पंजिका) में मिलता है जिन्हे ताड़ के पत्तों पर लिखा गया था।

ओड़िया भाषा की प्रमुख बोलियाँ:-

ओड़िया भाषा मुख्य रूप से ओड़िशा में बोली जाती है, जहां ये एक आधिकारिक भाषा है। इसके अतिरिक्त यह भाषा झारखण्ड और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भी बड़ी संख्या में लोगो के द्वारा समझी और बोली जाती है।

ओड़िया भाषा की प्रमुख लिपियां निम्न प्रकार से है।

मिदनापुरी ओड़िआ: पश्चिम बंगाल के मिदनापुर क्षेत्र में बोली जाने वाली

सिंहभूम ओड़िआ: झारखंड के पूर्वी सिंगभूम, पश्चिमी सिंगभूम एवं सरायकेला-खरसावां जिलों में बोली जाने वाली

बालेश्वरी ओड़िआ: बालेश्वर, भद्रक एवं मयूरभंज जिलों में बोली जाने वाली

गंजामी ओड़िआ: ओड़िशा के गंजाम एवं गजपति जिलों में, आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम् जिले में बोली जाने वाली

कलाहाण्डि ओड़िआ: ओड़िशा के कलाहाण्डि जिलों में बोली जाने वाली

देशीय

ओड़िआ: कोरापुट, रायगड़ा, नवरंगपुर एवं मालकानगिरि जिलों में तथा आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम जिले में बोली जाने वाली

संबलपुर

ओड़िआ: सम्बलपुर, देवगड़, सुन्दरगड़, बलांगिर, झारसुगुडा जिला, सुबर्नपुर, बौध जिला एवं बरगढ़ जिलों, ओर अनुगुल जिला के आठमल्लिक सबडिविजन तथा छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़, बिलासपुर, जैशपुर जिलों में बोली जाने वाली भाषा।

भात्री: दक्षिण-पश्चिमी ओड़िशा एवं पूर्व-दक्षिणी छत्तीसगढ़ में बोली जाने वाली भाषा

ओड़िया साहित्य :

ओड़िआ भाषा के प्रथम महान कवि झंकड के सारला दास थे जिन्होने देवी दुर्गा की स्तुति में चंडी पुराण और विलंका रामायण की रचना की थी। अर्जुन दास द्वारा लिखित राम-विवाह ओड़िआ भाषा की प्रथम दीर्घ कविता है। प्रारंभिक काल के बाद से लगभग 1700 ईसवी तक के समय को ओड़िआ साहित्य में पंचसखा युग के नाम से जाना जाता है। इस युग का प्रारंभ श्रीचैतन्य के वैष्णव धर्म के प्रचार से हुआ। बलराम दास, जगन्नाथ दास, यशोवंत दास, अनंत दास एवं अच्युतानंद दास - इन पांचों को 'पंचसखा' कहा जाता है। इस युग के अन्य साहित्यिकों की तरह इनकी रचनाएं भी धर्म पर आधारित थीं। इस काल के रचनाएं प्रायः संस्कृत से अनुवादित की हुई होती थीं या उन्हीं पर आधारित होती थीं। अनुवादों में आक्षरिक के अपेक्षा भावानुवाद का प्रचलन अधिक था।

अंत में हम कह सकते है कि किसी भी भाषा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। यह न केवल विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम है, बल्कि यह संस्कृति, पहचान और सामाजिक संबंधों को भी आकार देती है। और अगर वह भाषा हमारी मातृभाषा हो तो उसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इन भाषाओं में हमें विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता का पता चलता है। ओड़िया भी भारत की एक महत्वपूर्ण भाषा है जो एक बड़े भू- भाग पर बड़ी संख्या में लोगो के द्वारा बोली और समझी जाती है। ओड़िया भाषा का अपना गौरवपूर्ण इतिहास है। ओड़िया भाषा भी भारत की अन्य भाषाओँ की भांति भारत माता का श्रृंगार करती है। तथा हमारे देश की पहचान को एक बहुभाषी देश के रूप में विश्व-पटल पर रखती है। भारत की अन्य प्रमुख भाषाओँ की भांति ओड़िया भाषा का भी भी भारतीय साहित्य, कला, संगीत, और नृत्य के क्षेत्र में भी भारतीय भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

ओडिशा: इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम

श्रीमती रानी गिरि

पत्नी- श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक

ओडिशा, भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक ऐसा राज्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राचीन ऐतिहासिक गौरव और अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। इस भूमि ने अनेक साम्राज्यों और सभ्यताओं का उत्थान और पतन देखा है, जिसने इसे एक अनूठी पहचान दी है।

ओडिशा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है। प्राचीन काल में इसे कलिंग के नाम से जाना जाता था जिसका उल्लेख महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भी मिलता है। कलिंग का इतिहास 261 ईसा पूर्व में हुए कलिंग युद्ध के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। इस युद्ध ने मौर्य सम्राट अशोक के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया। इस भयानक नरसंहार को देखकर अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने हिंसा का त्याग कर बौद्ध धर्म को अपनाया। इस घटना ने न केवल ओडिशा के इतिहास को, बल्कि पूरे भारत के इतिहास को प्रभावित किया।

इसके बाद ओडिशा ने कई शक्तिशाली राजवंशों का शासन देखा। महामेघवाहन वंश के राजा खारवेल ने कलिंग की शक्ति और प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित किया। हाथीगुम्फा शिलालेख में उनके शासनकाल के गौरवशाली विवरण मिलते हैं। मध्ययुगीन काल में सोमवंशी, गंग और गजपति जैसे राजवंशों ने ओडिशा में शासन किया। गंग वंश के शासकों ने कोणार्क का सूर्य मंदिर और पुरी का जगन्नाथ मंदिर जैसे भव्य मंदिरों का निर्माण कराया, जो आज भी ओडिशा की स्थापत्य कला का प्रतीक हैं। गजपति साम्राज्य के दौरान ओडिशा की शक्ति दक्षिण भारत तक फैली हुई थी।

मुगल और मराठा शासन के बाद 1803 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासन के दौरान ओडिशा को बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा बना दिया गया, जिससे इसकी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को खतरा उत्पन्न हुआ। उत्कल गौरव मधुसूदन दास जैसे नेताओं के प्रयासों से 1 अप्रैल 1936 को ओडिशा को एक अलग प्रांत का दर्जा मिला। यह भारत का पहला राज्य था जो भाषा के आधार पर बनाया गया था। स्वतंत्रता के बाद ओडिशा ने आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाए, लेकिन अपनी सांस्कृतिक जड़ों को कभी नहीं छोड़ा।

प्राकृतिक सौंदर्य एवं प्रकृति का वरदान- ओडिशा का भूगोल अत्यंत विविध है, जिसमें पर्वत, पठार, नदियाँ, उपजाऊ मैदान और एक लंबी तटीय रेखा शामिल है। राज्य का अधिकांश भाग पूर्वी घाट की पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है, जो अपनी घनी वनस्पतियों और वन्यजीवों के लिए जाने जाते हैं। महानदी, जो राज्य की सबसे बड़ी नदी है, ओडिशा की जीवनरेखा मानी जाती है। इसके अलावा, ब्राह्मणी, बैतरणी, सुवर्णरेखा और रुशिकुल्या जैसी नदियाँ भी यहाँ के भूभाग को उपजाऊ बनाती हैं।

ओडिशा की सबसे बड़ी प्राकृतिक धरोहर चिल्का झील है, जो एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की लैगून है। यह प्रवासी पक्षियों का एक महत्वपूर्ण आवास है और जैव विविधता का एक अनूठा केंद्र है। यहाँ हर साल लाखों पक्षी साइबेरिया, ईरान और हिमालय जैसे दूर-दराज के स्थानों से आते हैं।

राज्य में कई राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य भी हैं, जिनमें सिमिलिपाल राष्ट्रीय उद्यान (जो अपने बाघों और हाथियों के लिए प्रसिद्ध है), भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान (खारे पानी के मगरमच्छों के लिए प्रसिद्ध) और सतकोसिया टाइगर रिजर्व

शामिल हैं। ओडिशा की लगभग 40% भूमि वनों से आच्छादित है, जो इसे भारत के सबसे हरे-भरे राज्यों में से एक बनाता है।

तटीय क्षेत्र में स्थित गोपालपुर, चांदीपुर और पुरी जैसे समुद्र तट पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पुरी का समुद्र तट न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि रेत कला (Sand Art) के लिए भी जाना जाता है, जिसके लिए कलाकार सुदर्शन पटनायक को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली है।

सांस्कृतिक विरासत: कला, नृत्य और उत्सवों का राज्य- ओडिशा की संस्कृति इसकी कला, संगीत, नृत्य और उत्सवों में जीवंत है। ओडिसी नृत्य, जो भारत के आठ शास्त्रीय नृत्यों में से एक है, अपनी भावपूर्ण मुद्राओं, जटिल ताल और आध्यात्मिक गहराई के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह नृत्य मूर्तियों से प्रेरित है और इसमें भगवान जगन्नाथ और कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया जाता है।

राज्य की स्थापत्य कला भी इसकी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है। भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क का "स्वर्ण त्रिभुज" स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। कोणार्क का सूर्य मंदिर, जिसे "ब्लैक पैगोडा" के नाम से भी जाना जाता है, अपनी जटिल नक्काशी और रथ के पहियों के लिए प्रसिद्ध है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है। पुरी का जगन्नाथ मंदिर, चार धामों में से एक, हिंदुओं के लिए एक पवित्र तीर्थस्थल है। इसकी वार्षिक रथ यात्रा एक विश्व प्रसिद्ध उत्सव है, जिसमें लाखों भक्त भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के रथों को खींचते हैं।

ओडिशा की हस्तकला भी इसकी सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती है। पट्टचित्र कला (कपड़े पर चित्रित कला), चांदी के तार का काम (तारकशी), टेराकोटा कला और एप्लिक वर्क यहाँ की कुछ प्रमुख हस्तकलाएँ हैं। ये कलाकृतियाँ न केवल यहाँ के कारीगरों की निपुणता को दर्शाती हैं, बल्कि यहाँ की धार्मिक और सांस्कृतिक कहानियों को भी बयां करती हैं।

ओडिशा में मनाए जाने वाले प्रमुख त्यौहारों में दुर्गा पूजा, राजा पर्व और नुवाखाई शामिल हैं। नुवाखाई एक कृषि से संबंधित त्यौहार है जो नई फसल के आगमन पर मनाया जाता है और यह भाईचारे और एकता का प्रतीक है।

अर्थव्यवस्था और विकास: कृषि से उद्योग तक- ओडिशा की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और खनिज उद्योग पर आधारित है। राज्य की लगभग 60% आबादी कृषि पर निर्भर है। यह चावल, दालों, तिलहन, जूट और गन्ना का एक प्रमुख उत्पादक है। ओडिशा को 'भारत का चावल का कटोरा' भी कहा जाता है।

खनिज संसाधनों के मामले में ओडिशा भारत के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक है। यहाँ लोहा, बॉक्साइट, क्रोमाइट, मैंगनीज और कोयले के विशाल भंडार हैं। राउरकेला में स्थित राउरकेला स्टील प्लांट भारत के पहले सार्वजनिक क्षेत्र के इस्पात संयंत्रों में से एक है। हाल के वर्षों में राज्य में कई बड़े औद्योगिक निवेश हुए हैं जिससे यह औद्योगिक विकास का केंद्र बन रहा है।

सेवा क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और पर्यटन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है। भुवनेश्वर को एक उभरते हुए आईटी हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रही है जिससे राज्य के राजस्व में वृद्धि हो रही है।

शिक्षा और सामाजिक विकास- ओडिशा ने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। राज्य में कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान हैं जैसे आईआईटी भुवनेश्वर, एम्स भुवनेश्वर और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (NISER)। राज्य सरकार शिक्षा के स्तर को सुधारने और साक्षरता दर को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है।

सामाजिक रूप से ओडिशा में आदिवासी समुदायों की एक बड़ी आबादी निवास करती है जो इसकी सांस्कृतिक विविधता को और भी बढ़ाती है। सरकार इन समुदायों के उत्थान और उनके सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भी प्रयासरत है।

निष्कर्ष- ओडिशा केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि एक जीवंत सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। यह वह भूमि है जहाँ शांति का संदेश देने वाले अशोक ने कलिंग के युद्ध के बाद अपने जीवन का उद्देश्य बदल दिया। यह वह स्थान है जहाँ कोणार्क के सूर्य मंदिर की कलात्मकता और पुरी के जगन्नाथ मंदिर की आध्यात्मिकता एक साथ मिलती है। अपने ऐतिहासिक गौरव, प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध कला और संस्कृति के साथ-साथ ओडिशा आधुनिक विकास की राह पर भी अग्रसर है। यह राज्य प्राचीन परंपराओं और भविष्य की आकांक्षाओं के बीच एक संतुलन स्थापित करता है जो इसे भारत के सबसे आकर्षक और महत्वपूर्ण राज्यों में से एक बनाता है।

ऑपरेशन सिंदूर: अडिग भारत की शौर्यगाथा और धैर्य की सीमा पर शक्ति का उदय

श्री अमित कुमार प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"बिनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीति। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।"

रामचरितमानस की इस पावन चौपाई में एक शाश्वत और मौलिक सत्य निहित है कि सहनशीलता सदैव महान और स्थायी होती है, लेकिन जब उसका गलत अर्थ निकाला जाए या उसे दुर्बलता समझ लिया जाए, तो वही सहनशीलता धर्मसंगत और अडिग शक्ति का रूप ले लेती है। भारत ने हमेशा अपने धैर्य की गहराई से शक्ति प्राप्त की है, किंतु इतिहास चेतावनी देता है: जब सीमा हद से ज्यादा पार हो जाए, तो हिमालय भी ज्वालामुखी जैसी बन उठती है। भारत के भाग्य का भी एक नया अध्याय इसी प्रकार प्रारंभ हुआ, जब भारत ने सहनशीलता के बजाए अपने इतिहास से सीखते हुए अन्याय का जवाब अग्नि से दिया। 22 अप्रैल 2025: वह दिन जब पहलगाम की शांत और मनमोहक घाटी निर्दोषों के रक्त से रक्तरंजित हो गई। यह युद्ध नहीं था, यह एक कायरतापूर्ण आतंकी हमला था, जिसमें धर्म पूछकर 26 निर्दोष नागरिकों की नृशंस हत्या कर दी गई। पूरे भारतवर्ष में शोक ने संकल्प का रूप लिया। हमारे दुख का सिंदूर, अब हमारे लिए न्याय का ध्वज बन गया। और वहीं से प्रारंभ हुआ ऑपरेशन सिंदूर : उस पवित्र प्रतीक के नाम पर जिसे आतंकवादियों ने मिटाना चाहा, किंतु जिसे भारत ने अब गर्व से धारण कर लिया।

न्याय की ओर बढ़ती घड़ी

उस अत्याचार के कुछ घंटों बाद, भारत की सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने निर्णायक कदम उठाए- सिंधु जल संधि को स्थगित कर दिया गया, अटारी चेकपॉइंट को सील किया गया, पाकिस्तानी नागरिकों के लिए सार्क वीजा छूट रद्द कर दी गई, और नई दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायुक्त के सैन्य अधिकारियों को अवांछित घोषित कर दिया गया। इन कूटनीतिक उपायों के साथ, भारत ने संकेत दिया कि उसकी धरती पर कोई भी खून-खराबा अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। खुफिया एजेंसियों ने, इंटरसेप्ट किए गए संचार और मानव नेटवर्क के साथ सेटेलाइट इमेज को जोड़ते हुए, नौ आतंकी शिविरों को चुना, जहां जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकी प्रशिक्षण लेते थे और तबाही की साजिश रचते थे। कोई नागरिक लक्ष्य नहीं, केवल पुष्ट आतंकी ढांचा को तबाह करना, इन अटूट नियमों का पालन करते हुए हमारे भारत के वीर जवान सर्जिकल सटीकता के साथ प्रतिशोध लेने के लिए तैयार खड़े हुए।

आतंकिस्तान की धड़कनों पर प्रहार

7 और 8 मई की रात 1:04 से 1:28 बजे के बीच, भारतीय मिसाइलों ने पाकिस्तानी आसमान को चीर दिया; तेज, सटीक और अजेय, सूर्योदय की पहली किरणों के क्षितिज को छूने से घंटों पहले। यह हमारी भारतीय सेना के तकनीकी श्रेष्ठता और रणनीतिक इच्छाशक्ति का ही प्रमाण है कि भारत की स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइलों ने सटीकता के साथ गरजते हुए पाकिस्तान के आतंकी शिविरों को धू-धू कर जलते हुए खंडहरों में बदल दिया और सैकड़ों आतंकवादियों को मार गिराया। मिसाइलों ने बहावलपुर के मरकज सुभान अल्लाह, मुरीदके के मरकज तैबा, तेहरा कलां के सरजाल, सियालकोट के महमूना जोया, बरनाला के मरकज अहले हदीस, कोटली के मरकज अब्बास और मस्कर राहील शाहिद, मुजफ्फराबाद के शवाई नाला और सैयदना बिलाल कैंप में आतंकी कार्यशालाओं को नष्ट कर दिया। प्रत्येक

हमले ने आतंक के हर उस वैचारिक धड़कनों पर प्रहार किया जिसने हत्यारों को हमारी सीमा पार भेजा था।

हर चुनौती का लौह संकल्प से जवाब

8 मई की रात को पाकिस्तान जो अब अपमानित महसूस कर रहा था, उसने भारत की स्पष्ट चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए, अमृतसर और श्रीनगर सहित 28 भारतीय सीमावर्ती शहरों में नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाते हुए ड्रोन हमले किए, जिनमें से सभी को स्वदेशी निर्मित एयर डिफेंस सिस्टम आकाश बैटरी, रूसी निर्मित एस-400, मध्यम दूरी के एसएएम बराक-8, पुरानी एडी प्रणाली के पिछोड़ा मिसाइलें, कम दूरी वाली विमान भेदी बंदूकें, कंधे से दागे जाने वाले सटीक इंटरसेप्टर और स्वदेशी एकीकृत ड्रोन डिटेक्शन और इंटरडिक्शन सिस्टम के साथ बहुस्तरीय एयर डिफेंस जैसे मेड इन इंडिया एयर डिफेंस प्रणाली द्वारा 100% सटीकता के साथ सभी ड्रोनों को आकाश में ही नष्ट कर दिया गया। एक भी पाकिस्तानी ड्रोन नुकसान पहुंचाने में कामयाब नहीं हुआ। जम्मू, पठानकोट, अखनूर, उधमपुर और अन्य शहरों में जिन लोगों ने लगातार अलार्म सुने और रात भर मिसाइलों को उड़ते देखा, उनके लिए यह कोई हेडलाइन नहीं थी, यह बेहद मुश्किल दौर था। भारत के बाकी हिस्से जिसे एक आंकड़े के रूप में पढ़ते हैं, सीमावर्ती इलाकों के नागरिक इसे जीवंत रूप में अनुभव कर रहे थे। और उन सभी के सकुशल रहने के पीछे हमारे सशस्त्र बलों की अडिग प्रतिभा है, जिनकी अराजकता में शांत सटीकता न केवल हमारी प्रशंसा की हकदार है, बल्कि हमारे विस्मय की भी।

ड्रैगन की ढाल को चीरते हुए

भारत ने पाकिस्तान की इस हिमाकत के बाद बेहद ही कठोर कार्रवाई की, लाहौर में पाकिस्तान की HQ-9 एयर डिफेंस सिस्टम को निष्क्रिय किया, साथ ही सियालकोट, रावलपिंडी, इस्लामाबाद और अन्य शहरों पर रणनीतिक हमले किए गए। सीमा पर एहतियाती तौर पर नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर भेजा जाना शुरू ही किया गया था कि पुनः 9 मई को भारतीय सीमावर्ती शहरों में व्यवधान का एक और दिन दर्ज किया गया; स्कूल बंद कर दिए गए, तनाव बेहद बढ़ गया, और कई क्षेत्रों में अज्ञात ड्रोन मँडराते पाए गए, जो सतर्कता और अस्थिरता के बढ़ते दौर का संकेत था। पाकिस्तान के एयरबेस को बेअसर करने से पहले, भारत ने एक और बेहद निर्णायक कदम उठाया: दुश्मन के रडार और वायु रक्षा कवच को तबाह करने का। लॉकहीड मार्टिन की TPS-77, जो 450 किलोमीटर से अधिक की दूरी तक स्कैन करने में सक्षम थीं, नष्ट कर दी गईं। उसके साथ, चीन द्वारा आपूर्ति की गई LY-80, HQ-9P, FN-6, और PL-15 सतह से हवा में मार करने वाली सैन्य प्रणालियों को भारतीय मिसाइलों ने निष्क्रिय कर दिया, जिससे पाकिस्तान की एयर डिफेंस व्यवस्था ध्वस्त हो गई और वैश्विक स्तर पर चीन की कमजोर रक्षा तकनीक उजागर हो गई। शुरुआती घंटों में ही चीन के जेएफ-17, जे-10सी और अमेरिकी एफ-16 सहित छह फ्रंटलाइन फाइटर जेट को मार गिराया गया। व्यापक साइबर हमले के कारण रावलपिंडी और कराची में कमांड हब्स में बाधा उत्पन्न होने के साथ ही, भारतीय मिसाइलों ने एक बार फिर पाकिस्तान के तथाकथित सुरक्षित आसमान को भेदने में सफलता हासिल की।

IAF की दहाड़

10 मई तक, बार-बार नियंत्रण रेखा का उल्लंघन और पाकिस्तान की दुस्साहस और भारतीय सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की नाकाम कोशिश ने भारत को और भी कठोर प्रतिक्रिया देने को मजबूर किया। भारत को उकसाने की कीमत स्पष्ट थी: भारत ने महत्वपूर्ण पाकिस्तानी हवाई ठिकानों, रनवे स्ट्रिप्स, वायु रक्षा प्रणालियों और प्रमुख सैन्य बुनियादी ढांचे को नष्ट कर दिया, जिसमें पाकिस्तान के सैकड़ों सैन्यकर्मी मारे गए। ग्यारह पाकिस्तानी वायु सेना के ठिकाने: नूर खान, रफीकी, मुरीद, सुक्कुर, सियालकोट, पसरूर, चुनियान, सरगोधा, स्कार्दू, भोलारी और जैकोबाबाद को इस तरह सटीकता से मिसाइलों ने तबाह किया के वे तुरंत ठीक कर इस्तेमाल में नहीं लाए जा सकते थे। उनके एयरबेस के रनवे खंडहर में पड़े थे, हैंगर सुलग रहे थे, जबकि भारतीय वायु सेना के फाइटर जेट राफेल, तेजस और सुखोई सीमा पर दृढ़ता से गश्त कर रहे थे; अविचल एवं चुनौती रहित। संदेश स्पष्ट था: पाकिस्तान की रीढ़ तोड़ने के लिए भारतीय सेना को सीमा पार करने की आवश्यकता नहीं है। कोई गहराई, कोई दूरी, कोई रक्षा पाकिस्तान को भारत के संकल्प और पहुंच से नहीं बचा सकती।

मिसाइलों के पीछे की मेधा

इन सबके बीच, यह जानना भी बेहद जरूरी है कि हर मिसाइल की गर्जना के पीछे हमारे रक्षा वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की दिन रात एक करने वाली कड़ी मेहनत छिपी है। DRDO की प्रयोगशालाओं से आकाश-NG सिस्टम सामने आया जिसने दुश्मन के हजारों ड्रोन को रोका, HAL के उन्नत रडार जिसने इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के भंवर से हमारे विमानों को बचाया और BEL के आकाशतीर तक: भारत का पहला पूरी तरह से स्वदेशी AI वार-क्लाउड, उपग्रह-मुक्त और विदेशी-प्रूफ। इन सबसे बढ़कर, ISRO के 10 उपग्रह जिन्होंने लाइव क्षति का आकलन करते हुए क्षतिग्रस्त आतंकी ठिकानों और एयरबेस की हाई रेजोल्यूशन

इमेज उपलब्ध कराई और जो अभी भी चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर हमला मायने रखता है। बेशक बंद कमरों में नवाचार के उन्हीं घड़ियों में भारत की रणनीतिक बढ़त गढ़ी गई थी।

भारतीय नौसेना की मौन महाशक्ति

पाकिस्तान में दहशत भरी लहरों से लेकर पीओके की कब्जे वाली घाटियों और अरब सागर के कांपते पानी तक, भारत का संकल्प उड़ान भरता रहा। भारतीय नौसेना भी पीछे नहीं रही, पहलगाम से 96 घंटे के भीतर, कैरियर बैटल ग्रुप: आईएनएस विक्रमादित्य और इसके मिग-29के विंग ने विध्वंसक, फ्रिगेट और पनडुब्बियों के साथ उत्तरी अरब सागर को लोहे की तरह जकड़ रखा था। लाइव हथियारों की फायरिंग ने स्तरित बेड़े-वायु रक्षा को पुख्ता किया, जबकि एयरबोर्न अर्ली वार्निंग हेलीकॉप्टरों ने आसमान को घेर रखा था। पाकिस्तानी युद्धपोत बंदरगाह में दुबके हुए थे, यह जानते हुए कि भारत की समुद्री मुट्ठी किसी भी खतरे को चकनाचूर कर सकती है। नौसेना, सेना और वायु सेना द्वारा एक एकीकृत संकल्प के तहत कोरियोग्राफ किए गए इस प्रहार ने ही पाकिस्तान को 10 मई को सीजफायर की भीख मांगने को मजबूर कर दिया: भारत के लिए यह, एक सामरिक विराम, युद्धविराम नहीं।

किराना हिल्स का भंडाफोड़

जब भारतीय वायुसेना ने सरगोधा एयरबेस पर हमला कर रनवे को बर्बाद कर दिया, तो पाकिस्तान का परमाणु केंद्र किराना हिल्स एक नई वास्तविकता का केंद्र बन गया। लंबे समय से पाकिस्तान के महत्वपूर्ण युद्ध भंडार के लिए एक छिपे हुए अभयारण्य के रूप में माना जाने वाला किराना, भारतीय निगरानी की अविचल निगाह के नीचे उजागर हो गया था। भारतीय वायु सेना का संदेश स्पष्ट और सरल था: "हमारी नजरों से बच नहीं सकते। " इस विलक्षण बदलाव ने पाकिस्तान के "न्यूक्लियर डेटरेंस" के भ्रम को तोड़ दिया, अब पाकिस्तान का हर वो 'बहुमूल्य' शस्त्रागार, भारतीय सेना के संभावित निशानों पर है जहां सटीकता से हमला किया जा सकता है। इन घटनाओं के बाद पाकिस्तान को चीन के गुस्से का भी शिकार होना पड़ा, आखिरकार इस पूरे प्रकरण में इस्लामाबाद ने बीजिंग की भी भारी फजीहत कराई। वाशिंगटन भी, क्षेत्रीय युद्ध के दूरगामी प्रभाव से डरते हुए, हॉटलाइन पर दोनों देशों से संपर्क पर रहा, मास्को ने भी रणनीति को फिर से मापने के लिए यूक्रेन के युद्ध विराम की पहल को रोक दिया। भारत ने न केवल सीमा अवरोध को तोड़ा था; इसने वैश्विक संतुलन को फिर से स्थापित करने को मजबूर किया।

घुटनों पर पाकिस्तान

10 मई को 15:35 बजे भारतीय समय अनुसार, भारत के डायरेक्टर जनरल मिलिट्री ऑपरेशंस (DGMO), लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई को उनके पाकिस्तानी समकक्ष ने हॉटलाइन पर कॉल किया: विषय था – तबाही के बोझ तले दबे हुए, युद्ध विराम के लिए एक हताश अपील। भारत, जो दृढ़ता से कमान में था और पाकिस्तान की नाटकीयता से वाकिफ और अप्रभावित, भारत ने युद्ध विराम का कोई उल्लेख नहीं किया। इसके बजाय, "गोलीबारी रोकने" की एक मापी हुई समझ व्यक्त की: एक सूक्ष्म लेकिन तीखा अनुस्मारक, एक अंतर जो इस बात को रेखांकित करता है कि युद्ध के मैदान को किसने नियंत्रित किया और किसने दया की भीख माँगी। "गोलीबारी रोकने" की समझ के बाद भी, पाकिस्तान, अपनी विश्वासघाती प्रवृत्ति के अनुसार, भारत के संकल्प का परीक्षण करने से अपने आप को रोक नहीं पाया।

आकाशीय निगरानी ने दिखाया सच

कुछ ही घंटों के भीतर, दोयम दर्जे के चीनी और तुर्की ड्रोनों के झुंड ने भारतीय सुरक्षा प्रणाली की रेकी करने की हिमाकत की, लेकिन हमारे स्वदेशी AD सिस्टम द्वारा उन्हें आसमान में ही नष्ट कर दिया गया। इन सबके बाद भी, पाकिस्तान प्रोपेगेंडा फैलाने से बाज नहीं आया, अपने प्रेस ब्रीफिंग में अपने खोखले दावों का समर्थन करने के लिए विश्वसनीय सबूतों का एक टुकड़ा भी पेश नहीं किया। पाकिस्तान के नष्ट हो चुके एयरबेस की सैटेलाइट तस्वीरें और पहले से ही नष्ट हो चुके अन्य महत्वपूर्ण सैन्य संपत्तियों पर उसकी चुप्पी किसी भी बयान से ज़्यादा ज़ोर से चीख रही थी। इसके विपरीत, भारत ने सैन्य गरिमा के साथ जवाब दिया, प्रत्येक हमले का फुल-मोशन वीडियो सबूत जारी किया, जिससे न केवल उसके ऑपरेशन की सटीकता, बल्कि उसके सशस्त्र बलों की पारदर्शिता और पेशेवर गौरव को भी बल मिला।

पाकिस्तान अकेले नहीं लड़ा

भारतीय सशस्त्र बलों ने पीओके और पाकिस्तान के भीतर तक दहाड़ लगाकर अपने पराक्रम और शौर्य को प्रदर्शित किया, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आखिरी मिसाइल दागे जाने के साथ ही कोई भी युद्ध समाप्त नहीं हो जाता। पाकिस्तान ने अकेले यह युद्ध नहीं लड़ा। उसके ढहते आतंकी बंकरों, सुलगते हैंगर, नष्ट किए गए रनवे और जले हुए रडार टावरों के पीछे उसके समर्थकों, चीन और तुर्की की शांत मशीनरी खड़ी थी। दोनों देशों ने ड्रोन, मिसाइल और अन्य सैन्य उपकरणों से युद्धक्षेत्र में उस आतंकी देश की मदद की जो मासूमों के खून पर पलता हो, जो धोखे देने के लिए जाना जाता हो और जिसका काम ही आतंकीयों

को "जिहाद" का सबसे गलत मतलब सिखाकर तैयार करना हो। इस बढ़ावे को वही कहने में कोई गुरेज नहीं जो यह है: आतंकवाद में मिलीभगत। पाकिस्तान के आतंकी केंद्र से उड़ान भरने वाले हर ड्रोन पर अंकारा की मुहर थी। हमारे जैमर से सुरक्षित हर एन्क्रिप्टेड ट्रांसमिशन की जड़ें बीजिंग में थीं। और जब भारतीय एयरबेसों को अलर्ट पर रखा गया, तो इस्लामाबाद को अज़रबैजान सरकार का भी समर्थन प्राप्त हुआ।

समय है बंधनों से मुक्ति का

क्या यह एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में हमें स्वीकार्य है? बिल्कुल नहीं। अब समय आ गया है कि हम न केवल अपनी सशस्त्र सेनाओं को बल्कि अपनी आर्थिक ताकत और सांस्कृतिक चेतना को भी हथियार बनाएँ। हम भारतीयों को उनके सामानों का बहिष्कार करना ही होगा, छात्रों के आदान-प्रदान में कटौती करनी चाहिए और इन देशों की अपनी यात्राएँ रद्द करनी चाहिए जो उनकी अर्थव्यवस्थाओं को फलने-फूलने में मदद करते हैं जबकि वे हमारे घावों को कुरेदते हैं। बहुत लंबे अंतराल से, हम मूक उपभोक्ता रहे हैं जबकि हमारे दुश्मन हमारे ही बाज़ारों और दिमागों से पैसे कमाते रहे हैं। भारत को स्पष्ट शब्दों में घोषणा करनी चाहिए: जो लोग हमारे दुश्मनों की मदद करते हैं, चाहे वे छुपकर ही क्यों न हों, उन्हें भारतीय संकल्प का पूरा भार झेलना होगा। इसके अलावा, जब भारत सरकार ने पाकिस्तान के नेताओं, अभिनेताओं, क्रिकेटरों और अन्य 'सेलिब्रिटीज़' के डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाया तो यह सेंसरशिप नहीं, यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मामला था। यह वही दोहरे चरित्र वाले लोग है जिन्होंने भारतीय स्क्रीन और स्टेडियमों पर अपनी छवि बनाई, पैसे कमाए, प्रसिद्धि पाई लेकिन जब समय आया तो सच जानने के बावजूद भी अपने आकाओं के द्वारा दिए गए प्रोपेगेंडा को ही फैलाना में लग गए। हम जब भी उनके कंटेंट को देखते हैं, हर लाइक, हर शेयर, उनके प्रोपेगेंडा वार को फंड करता है और बल देता है। आखिर सोचिए, भारतीय आँखें दुश्मनों को क्यों फंड करे? ऐसे समय में, देशभक्ति सिर्फ़ युद्ध के मैदान में नहीं: यह हमारे स्क्रॉल, हमारे क्लिक और हमारी अंतरात्मा में भी स्वाभाविक रूप से होनी ही चाहिए।

शब्दों में शक्ति – संकल्प में आग

10 मई की शाम को, जब नियंत्रण रेखा के पास बंदूकें शांत हो गईं, भारत का सैन्य नेतृत्व विनम्रता से नहीं, बल्कि नपे-तुले ढंग से आगे बढ़ा। नई दिल्ली में, तीनों सेनाओं की प्रेस ब्रीफिंग में, कमोडोर आर। एन। नायर ने हर नाविक, सैनिक और वायुसैनिक की ओर से बोलते हुए कहा कि "हम हमेशा तैयार हैं, हमेशा सतर्क हैं, किसी भी दुस्साहस का निर्णायक जवाब दिया जाएगा। " उनके शब्द, विदेश सचिव विक्रम मिस्री के आश्वस्त लहजे में और विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी जैसे अधिकारियों द्वारा प्रतिध्वनित, एक विलक्षण सत्य को एक साथ जोड़ते हैं: भारत भले ही धीरे बोलना पसंद करे, लेकिन इसकी शक्ति के उपकरण अचूक सटीकता के साथ दहाड़ते हैं।

चौबीस घंटे से भी कम समय बाद, 11 मई को, स्वर और तीखा हो गया। एक और तीनों सेनाओं की ब्रीफिंग में, लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने चेतावनी देते हुए कहा कि "कॉस्ट एस्केलेशन आपके कल्पना पर छोड़ता हूं; यह भयंकर और दंडात्मक होगी। " वाइस एडमिरल ए। एन। प्रमोद ने भी उतनी ही गंभीरता से कहा: "इस बार अगर पाकिस्तान ने कोई कार्रवाई करने की हिम्मत की, तो पाकिस्तान को पता है कि हम क्या करने जा रहे हैं, बस इतना ही", जबकि एयर मार्शल ए। के। भारती ने दुनिया को याद दिलाया कि भारतीय वायुसेना का काम "लक्ष्यों को भेदना है, शवों की गिनती करना नहीं"। उन चंद वाक्यों में, भारत के सैन्य उच्च कमान ने एक संतुलित प्रतिरोध की रूपरेखा तैयार की: अडिग संकल्प और अजेय क्षमता।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की रणनीतिक दृष्टि-

उसी दिन, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने राष्ट्र के सामने नई ब्रह्मोस एकीकरण और परीक्षण सुविधाकेंद्र का उद्घाटन किया और ऑपरेशन सिंदूर पर एक व्यापक रणनीतिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया।

"ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि यह भारत की राजनीतिक, सामाजिक और रणनीतिक इच्छाशक्ति का प्रतीक था,"

उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को उरी के बाद किए गए सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा के बाद किए गए एयर स्ट्राइक के साथ जोड़कर इस बात को प्रमाणित किया कि "सीमा पार की जमीन भी आतंकवादियों और उनके आकाओं के लिए सुरक्षित नहीं है। " उन्होंने सशस्त्र बलों की प्रशंसा करते हुए कहा: "हमारे बहादुर लोगों ने उन निर्दोष परिवारों को न्याय सुनिश्चित किया जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया" और ब्रह्मोस सुविधाकेंद्र के विषय में कहा कि "भारत की ताकत और सीमाओं की सुरक्षा के लिए यह हमारी प्रतिबद्धता का संदेश है"। भारत रत्न डॉ। ए। पी। जे। अब्दुल कलाम को उद्धृत करते हुए उन्होंने हमें याद दिलाया कि "जब तक भारत दुनिया के सामने खड़ा नहीं होगा, कोई भी हमारा सम्मान नहीं करेगा। "

“डाबरखोल जलप्रपात” का सफर

श्रीमती सबिता साहू
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

बड़म्बा ब्लॉक कटक जिले का एक ऐसा क्षेत्र है जो इतिहास, संस्कृति और प्राकर्तिक सौंदर्य से भरपूर है। इसका “डाबरखोल जलप्रपात” ओड़िशा राज्य के प्राकृतिक खजाने में से एक है। यह प्रपात अपनी खूबसूरती और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। यह कटक से लगभग 90 कि.मी और भुवनेश्वर से लगभग 96 कि.मी की दूरी पर स्थित है।

बड़म्बा से नरसिंहपुर की और जाते हुए पाँच किमी के बाद ‘गोपपुर’ आता है। हमें गोपपुर से दाएँ और मुड़तें है तो कुछ छोटे गाँवों को पार करने के बाद हमें कुछ आदिवासी गांवों वाले छोटे-छोटे जंगलों की और बढ़तें है। रास्तें में बांस की झाड़ियों वाले छोटे- छोटे जंगल भी आते है। ऐसे ही आठ से 10 कि.मी आगे जाने पर, सुंदर “डाबरखोल जलप्रपात” का प्रवेशद्वार आएगा, जहाँ वनरक्षक और छोटे-छोटे चाय नाश्ते के स्टॉल भी होंगे। घने जंगल में छुपा यह एक शांत और मनोरम प्राकृतिक स्थान है।

प्रवेशद्वार से “डाबरखोल जलप्रपात” तक पहुचने के लिए एक छोटी ट्रैकिंग करनी पड़ती है, जो चट्टानी रास्ते के बीच छोटा पहाड़ में चढ़ाई और नीचे तक आसान-मध्यम श्रेणी का ट्रैक करने का मजा कुछ अलग रोमांचक होता है। रास्ते में घने घने बांसों की झाड़ियाँ न केवल छाया प्रदान करती है बल्कि इसकी हरियाली आँखों को सुकून और मन में ताजगी भर देती है। यहाँ झरनों से बहता हुआ पानी चट्टानों से नीचे गिरते हुए एक संगीतमय आवाज करता है। चारों और हरियाली से घिरा हुए इस प्रपात के पास पक्षियों की चहचहाहट और पानी की आवाज मिलकर एक मधुर धुन का निर्माण करती है। जंगलों और जलप्रपात के बीच विश्राम,स्नान, ट्रैकिंग और फोटोग्राफी करना भी मजेदार है।

‘डाबरखोल जलप्रपात’ के आस-पास का क्षेत्र भी बेहद सुंदर है। यहाँ कि ठंडी हवा, प्राकर्तिक छटा हर आगंतुक को मंत्रमुग्ध कर देती है। यहाँ आस-पास के गाँवो में स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली भी देखने को मिलेगी जो, पर्यटकों को एक नया अनुभव प्रदान करेगा।

परिवार या दोस्तों के साथ यात्रा शीत काल उत्तम मौसम सुहाना और सुरक्षित रहेगा। फिर भी, हम बारिश के मौसम को छोड़कर, गर्मियों के दौरान भी जा सकते है।

यदि आप प्रकृति की गोद में एक दिन बिताना चाहते हैं, जहाँ आप झरनों की मधुर आवाज सुन सकें, ताज़ी हवा में सांस ले सके और जीवन की भाग दौड़ में दूर एक सुकून भरा पल बिता सकें, तो “डाबरखोल जलप्रपात’ आपके लिए एक बिल्कुल सही जगह है। यहाँ की यात्रा आपके जीवन में एक अनमोल याद बनकर रहेगी।

विदाई सम्बर्धना - श्री जशोबंत मोहांती, पर्यवेक्षक

श्री सय्यद शैबान फ़ैज़ल
लेखापरीक्षक

जशोबंत जी का नाम है, एक मिसाल की तरह,
हर काम में सच्चाई, हर बात में कमाल की तरह।
संवेदनशीलता में गहराई, अनुशासन में चमक,
उनकी मेहनत रही जैसे सूरज की दमक।

न कोई शोर, न कोई दिखावा, बस कर्म की राह,
हर दिन उन्होंने निभाया जैसे पूजा की चाह।
अब जब रिटायर हो रहे हैं, तो दिल कहता है यही,
आपकी कमी हर कोने में महसूस होगी कहीं।

कार्यकुशलता की राहों में जो निशान छोड़ चले,
हर दिल में अपनी एक पहचान छोड़ चले।
मुस्कुराते रहे हर मोड़ पर, यही अंदाज़ था,
आज रुख़सत हुए तो यादें बेमिसाल छोड़ चले।

मौका ढूँढते थे जो विभाग में भोजन समारोह की,
बस मिल जाए उन्हें किसी से भी एक ख़बर खुशी की,
चाहे ली हो आपने नई शर्ट, नई गाड़ी, या नई मकान,
या फिर खरीदा हो किसी भी तरह का नया सामान,

चाहे हो आपका जन्मदिन या लगी हो बेटे की नौकरी,
या फिर बेटे के लिए मिल गई हो एक छोकरी,
खुद एक दाना भी ना खाया करते थे, पर सब को खिलाने का करते थे इन्तेजाम,
बार-बार यह ज़ज्बा देख, यह दिल कहता आपको अस्सलाम अस्सलाम,

आपका जाना एक युग का अंत नहीं,
बल्कि प्रेरणा है, जो रहेगी सदा यहीं।
सलाम है उस सफर को, जो आपने तय किया,
हर दिल में जशोबंत नाम अमिट रह गया।

ऑफिस की दीवारें भी अब कुछ कहेंगी,
उनकी हँसी, उनकी बातें सब याद रहेंगी।
अब कौन देगा हमें चॉकलेट और टॉफियां
हर सुबह की चाय में आपकी यादें बहेंगी।

अब सफर नया है, मंज़िलें भी नई होंगी,
हर सुबह में खुशियाँ, हर शाम में रवानी होंगी।
जशोबंत जी, आपकी मेहनत की मिसाल रहेगी,
आपकी सादगी, आपकी शैली-हर दिल में सवाल रहेगी।

रिटायरमेंट है बस एक मोड़, न कोई विराम,
आपका अनुभव है जैसे कोई अनमोल धरोहर का नाम।
शैबान की तरफ़ से दिल से ये पैग़ाम है,
आपका हर दिन सुखद हो, यही अरमान है, यही अरमान है।

सम्मान के दो किनारे

श्रीमती शादमा ज़हीन
पत्नी - श्री सय्यद शैबान फ़ैज़ल

जब हर तरफ़ नारी सशक्तिकरण की बात है,
तो क्यों पुरुषों की खामोशी अनसुनी सी याद है ?
क्या वो नहीं थामते आँसुओं की धार,
या नहीं झेलते ज़िम्मेदारियों का भार?

पुरुष भी टूटते हैं पर दिखते नहीं कमज़ोर,
उनके जज़्बात भी होते हैं कुछ अनकहे, कुछ कमजोर।
ना हर बार वो ताक़त की मूरत हैं,
कभी-कभी वो भी खुद से ही रूठते हैं।

समानता का अर्थ है सबको सम्मान देना,
ना किसी को ऊँचा, ना किसी को छोटा कहना।
नारी का उत्थान ज़रूरी है - बिलकुल सही,
पर पुरुष की गरिमा भी होनी चाहिए कहीं।

बेटियों के सपनों को उड़ान दो - ये सुंदर बात है,
पर बेटों से भी कहो कि रोना कमज़ोरी नहीं, उसकी भी सौगात है।
सिर्फ़ माँ का त्याग क्यों सराहा जाए,
पिता की रातें भी तो चिंता में बिताई जाएं।

चलो एक नया सूरज उगाते हैं,
जहाँ हर दिल को बराबरी का अधिकार दिलाते हैं।
ना वो हीन हो, ना ये श्रेष्ठ हो,
लैंगिक नहीं - इंसानियत ही सोच का केंद्रस्थ हो।

क्योंकि सच्ची समानता वहीं होती है,
जहाँ हर शख़्स की इज्ज़त होती है।

विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरती हिंदी

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनि.अनुवादक

हिंदी भारत की एक प्रमुख भाषा है जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है और इसे उत्तर भारत में व्यापक रूप से बोला और समझा जाता है लेकिन पूरे भारत में इसके बढ़ते प्रभाव के कारण भारत में हिंदी एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा है क्योंकि यह देश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को संभव बनाती है, भले ही उनकी अपनी मूल भाषाएँ अलग हों। हिंदी के व्यापक प्रसार, खासकर सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में, इसे विभिन्न राज्यों और लोगों को जोड़ने वाले एक पुल के रूप में स्थापित करता है, जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है।

भारत में हिंदी के संपर्क भाषा होने के कारण:

1. व्यापक स्वीकार्यता:

हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और इसे भारत के बड़े जनसमूह द्वारा समझा और बोला जाता है।

2. सामाजिक एकीकरण:

हिंदी एक ऐसा माध्यम है जो भारत की विविध संस्कृतियों को एक साथ जोड़ने में मदद करता है और सामाजिक एकता की भावना पैदा करता है।

3. संचार की सुविधा:

यह भाषा उन लोगों के बीच संचार को सुगम बनाती है जो एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क आसान हो जाता है।

4. प्रसार और लोकप्रियता:

सोशल मीडिया, इंटरनेट और विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इसे आज के आधुनिक युग में भी एक सशक्त संपर्क भाषा बनाता है।

केंद्र में राजभाषा के रूप में हिंदी :

हिंदी को भारत की केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा (राजभाषा) के रूप में 14 सितंबर 1949 को स्वीकार किया गया था। इसके बाद, संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में प्रावधान किए गए। 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है, ताकि इस महत्वपूर्ण तिथि को याद रखा जा सके।

विश्व स्तर पर हिंदी तेजी से बढ़ रही है और वर्तमान में अंग्रेजी और मंदारिन के बाद तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। भारत में लगभग 45 करोड़ लोग हिंदी को अपनी मूल भाषा के रूप में बोलते हैं, जबकि विदेशों में भी हिंदी का शिक्षण और प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। बॉलीवुड, भारतीय साहित्य और प्रवासी समुदायों की लोकप्रियता, साथ ही संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर हिंदी की बढ़ती महत्ता, हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित कर रही है।

भारत सरकार हिंदी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार के लिए कई प्रयास कर रही है। इसमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना, स्वैच्छिक हिंदी संगठनों को वित्तीय सहायता, और विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा हिंदी में प्रकाशन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, हिंदी को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है, और हिंदी प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित किया जा रहा है।

हिंदी सरकारी प्रयास:

1. केंद्रीय हिंदी निदेशालय:

1960 में स्थापित, यह निदेशालय हिंदी को अखिल भारतीय स्वरूप देने, जन-जन को जोड़ने और वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए काम करता है।

2. स्वैच्छिक हिंदी संगठनों को वित्तीय सहायता:

सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगे स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ:

ये समितियाँ सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा करती हैं और आवश्यक उपाय करती हैं।

4. हिंदी प्रशिक्षण संस्थान:

ये संस्थान सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित करते हैं।

5. सरकारी प्रकाशन:

विभिन्न सरकारी संस्थान हिंदी में ई-पत्रिकाएँ, रिपोर्टें, और अन्य सामग्री प्रकाशित करते हैं, जिससे हिंदी के पाठक लाभान्वित होते हैं।

6. तकनीकी विकास:

हिंदी के लिए मानकीकृत कीबोर्ड और सॉफ्टवेयर विकसित किए जा रहे हैं, और हिंदी में वेबसाइटों और ऑनलाइन सामग्री को बढ़ावा दिया जा रहा है।

7. विदेशों में हिंदी का प्रचार:

भारत सरकार विदेशों में भी हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के प्रयास कर रही है, जैसे कि विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन और विदेशों में हिंदी शिक्षण संस्थानों की स्थापना, विदेश मंत्रालय के अनुसार।

8. राजभाषा विभाग:

गृह मंत्रालय के अधीन यह विभाग हिंदी के प्रयोग, प्रचार और विकास के लिए नीतियां और दिशा-निर्देश जारी करता है।

9. अन्य प्रयास:

विभिन्न मंत्रालयों और विभागों द्वारा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थानों को पुरस्कृत किया जाता है।

ये प्रयास हिंदी भाषा को मजबूत बनाने और इसे भारत की एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

अ आ इ ई उ ऊ

ए ऐ ओ औ अं अः

◌ा ि◌ ◌ी ◌ु ◌ू ◌े

◌ै ◌ो ◌ौ ◌ॉ ◌ं ◌ः

हिंदी के वैश्विक विस्तार के प्रमुख कारण:

1. बढ़ती जनसंख्या:

हिंदी बोलने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी भाषाओं में से एक बन गई है।

2. बॉलीवुड और साहित्य:

हिंदी फिल्मों (बॉलीवुड) की लोकप्रियता और भारतीय साहित्य की वैश्विक पहचान ने हिंदी को भौगोलिक सीमाओं से परे पहुंचा दिया है।

3. प्रवासी समुदाय:

दुनिया के विभिन्न देशों में बसे भारतीय मूल के लोग अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं और हिंदी को बढ़ावा दे रहे हैं।

4. शिक्षा में वृद्धि:

अमेरिका, कनाडा, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया भर के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई कराई जा रही है।

5. संयुक्त राष्ट्र में महत्ता:

विश्व हिंदी दिवस पर संयुक्त राष्ट्र में हिंदी के महत्व पर चर्चा होती है, और संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषाओं की सूची में शामिल करने की दिशा में काम किया है, जिससे हिंदी को वैश्विक महत्व मिला है।

6. तकनीक और व्यवसाय:

आधुनिक तकनीक के साथ हिंदी का जुड़ाव व्यवसायों के लिए नई संभावनाएँ खोल रहा है, जिससे यह बड़े बाजारों में प्रवेश का एक माध्यम बन रही है।

7. सांस्कृतिक प्रभाव:

भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव भी हिंदी के विस्तार में सहायक है।

निष्कर्ष :-

भारत के विकास में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारत की संस्कृति, विरासत और एकता का प्रतीक भी है। हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों को एकजुट करने और राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज, यह भारत के विकास के विभिन्न पहलुओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जिसमें शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, और मनोरंजन शामिल हैं। कुछ स्रोतों का कहना है कि हिंदी भाषा के विकास में भी बहुत योगदान है । हिंदी भाषा ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाने और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने में मदद की है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हिंदी ने लोगों को एकजुट करने और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, और इसने भारत के लोगों को शिक्षित करने और ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी भारत सरकार और अन्य सरकारी संस्थानों में एक आधिकारिक भाषा है, और इसने प्रशासन को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने में मदद की है। हिंदी का उपयोग भारत में व्यापार और वाणिज्य में भी किया जाता है, और इसने व्यापार को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास में योगदान दिया है। हिंदी सिनेमा, जिसे बॉलीवुड भी कहा जाता है, भारत और दुनिया भर में लोकप्रिय है। यह हिंदी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद करता है। हिंदी साहित्य, संगीत, और कला के माध्यम से, हिंदी ने भारत की समृद्ध संस्कृति को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद की है। हिंदी का उपयोग इंटरनेट और डिजिटल मीडिया में भी बढ़ रहा है, जिससे यह एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है। हिंदी भाषा भारत के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारत की संस्कृति, विरासत, और एकता का प्रतीक भी है। कई स्रोतों के अनुसार, हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है, और यह भारत के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

शांति निकेतन: एक अनाम कस्बे से विश्व धरोहर बनने तक का सफ़र

श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्रा

पत्नी श्री अमित कुमार प्रधान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पश्चिम बंगाल में 'लाल माटी के देश' के नाम से मशहूर बीरभूम ज़िले में बसे शांति निकेतन का नाम देश और दुनिया में अनजाना नहीं है। इसे मशहूर बनाया कवि गुरु रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय ने।

शांति निकेतन का शाब्दिक अर्थ है शांति का निवास यानी वह जगह जहां शांति हो। हालांकि हाल के वर्षों में विश्व भारती विश्वविद्यालय के विवाद के कारण यह शहर अपने नाम के विपरीत ग़लत वजहों से सुर्खियों रहा। यह शहर केंद्र और राज्य सरकार के बीच टकराव का भी केंद्र रहा।

शांति निकेतन का रवींद्रनाथ टैगोर से नाता

बंगाल की कला और संस्कृति का केंद्र कहे जाने वाला यह शहर इतिहास के अनेक गौरवशाली अध्याय का साक्षी रहा है। शांति निकेतन की स्थापना भले यहां विश्वविद्यालय की स्थापना के बहुत पहले हुई हो लेकिन रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय ने ही इस शहर को वैश्विक पहचान दिलाई। यह दोनों लंबे अरसे से एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं।

इस शहर को सरकारी कामकाज़ की भाषा में बोलपुर कहा जाता है। इसे हेरिटेज लिस्ट में शामिल करने की कोशिशें तो 2010 में ही शुरू हुईं थीं। इसमें कामयाबी अब मिली है। बीती मई में रवींद्र जयंती के मौक़े पर ही इसके संकेत मिलने लगे थे कि शांति निकेतन को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने का इंतज़ार अब जल्दी ही ख़त्म होने वाला है।

शांति निकेतन का नाम बंगाल के इतिहास और संस्कृति से काफ़ी गहरे जुड़ा है। बंगाल के इतिहास और संस्कृति पर कोई भी बहस शांति निकेतन के ज़िक्र के बिना अधूरी ही रहेगी।

वर्ष 1901 में शांति निकेतन में पहली बार एक स्कूल की स्थापना की गई थी। दुनिया भर में मशहूर शांति निकेतन विश्वविद्यालय की स्थापना 1921 में हुई थी।

विश्वविद्यालय के संचालन के लिए 1922 में विश्व भारती सोसाइटी का गठन किया गया। कवि गुरु रवींद्रनाथ टैगोर ने इसी सोसाइटी को अपनी पूरी संपत्ति दान दे दी थी। साल 1951 में इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिला था।

इस शहर की स्थापना कविगुरु रवींद्रनाथ के पिता महर्षि देवेंद्र नाथ टैगोर ने 1863 में की थी। तब उस जगह को भुवनडांगा के नाम से जाना जाता था। उन्होंने उस साल करीब 20 एकड़ जमीन सालाना पांच रुपए की लीज पर ली। उसके बाद वहाँ एक आश्रम की स्थापना की गई। देवेंद्रनाथ ने उस आश्रम का नाम शांति निकेतन रखा था। उसी के आधार पर धीरे-धीरे यह इलाक़ा शांति निकेतन के नाम से मशहूर हो गया।

उन्नीसवीं सदी के मध्य में बोलपुर एक छोटी-सी जगह थी। इस कस्बे का एक हिस्सा रायपुर के सिन्हा परिवार की जमींदारी का हिस्सा था। उसी परिवार के भुवन मोहन सिन्हा ने भुवनडांगा गांव बसाया था।

कविगुरु रवींद्रनाथ 1878 में पहली बार यहां आए थे। बीसवीं सदी की शुरुआत में यह शहर धीरे-धीरे राज्य की कला और संस्कृति के केंद्र के तौर पर उभरने लगा। यहां आयोजित होने वाला पौष मेला और होली उत्सव भी विश्व भारती विश्वविद्यालय की तरह पूरी दुनिया में मशहूर है। इस दौरान पूरी दुनिया से पर्यटक यहां पहुंचते हैं।

स्वाधीनता आंदोलन में शांति निकेतन की भूमिका

शांति निकेतन ने भले स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कोई बड़ा क्रांतिकारी नहीं पैदा किया हो, लेकिन बंग-भंग और स्वाधीनता आंदोलन में इस शहर की भूमिका बेहद अहम रही।

कविगुरु रवींद्रनाथ अपनी रचनाओं के ज़रिए लोगों में अलख जगाने का काम करते रहे। महात्मा गांधी के साथ उनकी पहली मुलाक़ात भी यहीं हुई थी। गांधी जी से कई मुद्दों पर मतभेद के बावजूद कविगुरु ने स्वदेशी आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था।

जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद उन्होंने 'नाइट' की उपाधि का त्याग कर दिया था। गुरुदेव ने यहीं लिखा था कि 'जोदि तोर डाक सुने केउ ना आसे, तोबे एकला चलो रे'। उनकी यह पंक्तियां प्रासंगिक हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर ने 1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान बंगाली आबादी को एकजुट करने के लिए 'बांग्लार माटी, बांग्लार जल' (बंगाल की मिट्टी, बंगाल का पानी) गीत लिखा। उन्होंने मशहूर गीत 'आमार सोनार बांग्ला' भी लिखा। इस गीत ने लोगों में राष्ट्रवाद की भावना मजबूत करने में मदद की। रवींद्रनाथ ने उसी दौरान सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए राखी उत्सव की शुरुआत की। इसमे हिंदू और मुस्लिम समुदायों के लोगों ने एक-दूसरे की कलाई पर रंग-बिरंगे धागे बांधे थे।

रवींद्रनाथ टैगोर के सपनों का सम्मान

इतिहास के प्रोफेसर पवित्र कुमार घोष कहते हैं, "शांति निकेतन को यूनेस्को की सूची में बहुत पहले ही जगह मिल जानी चाहिए थी। लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद। सांप्रदायिक सद्भाव, संस्कृति और कला के क्षेत्र में इस शहर के योगदान का इतिहास बेहद समृद्ध रहा है। बंग-भंग और स्वाधीनता आंदोलन में भी इसने अहम भूमिका निभाई थी। "

कोलकाता के रवींद्र भारती विश्वविद्यालय में इतिहास के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर हितेंद्र पटेल कहते हैं, "यह महान कवि चिंतक रवींद्रनाथ टैगोर के सपनों का सम्मान है। पूरी मानवता के प्रति समर्पित शिक्षा के आदर्श को लेकर चले कवि ने समाज और आत्म शक्ति उद्बोधन को जोड़ा था, यह देखने का आदर्श दिया था कि लोक जीवन के आदर्श और साथ शिक्षा के समन्वय से ही बेहतर मनुष्य और समाज का निर्माण संभव है। शांतिनिकेतन को वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में शामिल किया जाना हमारे लिए गर्व का विषय है। "

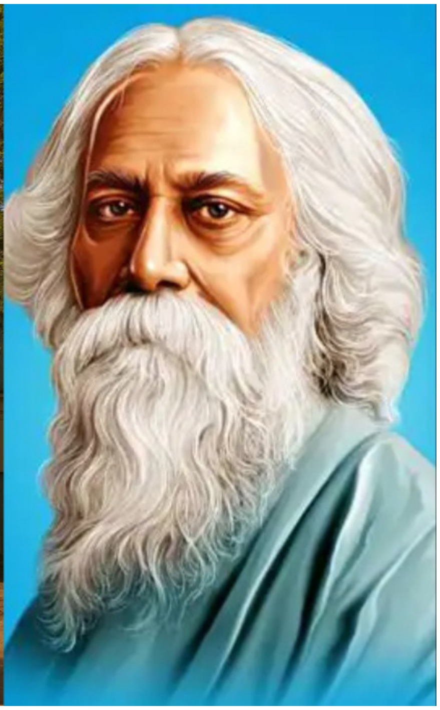

श्री जगन्नाथ धाम पुरी और कुछ दर्शनीय मंदिरों के दर्शन

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
पर्यवेक्षक / ए. एम.जी-I

पिछले साल मैं और मेरी सहेली दिनांक 17.02.2024 से 18.02.2024 तक जगन्नाथ पुरी में थे। हमने वहाँ जगन्नाथ जी के दर्शन किये थे। फिर इस साल 2025 में उनके दर्शन के लिए मन बेचैन होने लगा तो हम दोनों ने श्रीमंदिर के पास वाली दोलमंड़प साही स्थित "महाप्रभु गेस्ट हाउस नाम के लॉज में दो दिन के लिए एक कमरा एडवांस बुक कर लिया।

दिनांक 01.03.2025, शनिवार के दिन सुबह आठ बजे के आस पास हम लोगो ने हमारी भुवनेश्वर से पुरी की यात्रा की शुरुआत कर दी। इस बार हमने हमारी दो सहेलियों को भी साथ लिया था। हमने यह तय किया था कि हम चार सहेलियाँ शनिवार के दिन श्रीक्षेत्र पुरी के आसपास कुछ मंदिरों के दर्शन करते हुए श्री जगन्नाथ जी के दर्शन करेंगी। इसी योजना के अनुसार हम चारों पहले भुवनेश्वर से पुरी की तरफ बनी नव कलेवर रोड से होते हुए बीच में पुरी जिले के सिरुली नामक गाँव में स्थित श्री हनुमानजी के मंदिर जो कि 'सिरुली महावीर' नाम से प्रसिद्ध है के दर्शन करने के लिए जाने लगे। मुख्य रास्ते के बाएँ तरफ जाकर कुछ लोगो के बीच से निकलकर हम 'सिरुली महावीर' मंदिर पहुँच गए।

'सिरुली महावीर' मंदिर शिवजी के एकादश रूद्र रूप श्री हनुमानजी को समर्पित है। एक किवदंती के अनुसार श्री जगन्नाथपुरी में श्रीमंदिर बनने के बाद जब जगन्नाथ जी अपने बड़े भाई श्री बलभद्र और छोटी बहन सुभद्राजी के साथ वहां रहने लगे तो हनुमानजी भी वहां अपने प्रभु की सेवा के लिए रहने लगे। रात के वक्त जब वे सोते थे तो उनकी खर्राटे की विकट ध्वनि पूरे श्रीमंदिर में गूंजती थी जिससे माता महालक्ष्मी को सोने में बड़ी परेशानी होने लगी फिर उन्होंने श्री जगन्नाथजी से विनती की कि "प्रभु आप हनुमान को कहिये कि आप से थोड़ी दूर रहकर आपकी सेवा करें" यह बात सुनकर श्री जगन्नाथ जी ने हनुमानजी से कहा कि "आप यहाँ से अपने ढाई कदम की दूरी पर सिरुली ग्राम में निवास करो। " उस आदेश की सिरोधार्य करते हुए हनुमानजी आकर सिरुली गाँव में रहने लगे जो कि पुरी से लगभग 30 कि.मी की दूरी पर स्थित है।

इस मंदिर में श्री हनुमानजी का विग्रह लगभग 10 फिट ऊँचा है। पत्थर से बनी इस मूर्ति के एक हाथ में एक छोटी तलवार और दूसरे हाथ में गंधमर्दन पर्वत को उठाए हुए हैं समग्र विग्रह ऊपर से नीचे तक विभिन्न फूलों के साथ-साथ तुलसी की मालाओं से सुशोभित है। यहाँ हर साल महा विसुबा संक्रांति पर हनुमान जयंती मनाई जाती है। आस पास गाँवो के लोगो की भीड़ उमड़ पड़ती है और सभी लोग भक्तिभाव से इसमें भाग लेते है। इस तरह हर वर्ष "श्रीरामनवमी" के नौ दिन यहाँ "श्रीरामचरितमानस पारायण" एवं यज्ञ होता है। यहाँ यह उत्सव भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

इस तरह से 'सिरुली महावीर जी' को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए हम वहां से विदा लेकर श्रीक्षेत्र पुरी की और जाने लगे। रास्ते मन हम लोगो ने ब्रह्मगिरी स्थित श्री अलारनाथ जी के दर्शन किये। श्री क्षेत्र पुरी में श्रीजगन्नाथ जी की स्नानयात्रा उत्सव के बाद तीनो विग्रह पंद्रह दिनों के लिए 'अनवसर' में रहते है कहा जाता है कि स्नान करके भगवान जी को बुखार आ जाता है इसलिए उनकी दैनिक पूजा अर्चना तथा महाप्रसाद सेवा बंद रहती है। भक्तजन इन पंद्रह दिनों में केवल उनके पट्टचित्र का दर्शन कर सकते है। इस पंद्रह दिन की अवधि में श्रीजगन्नाथ जी ब्रह्मगिरि

स्तिथ अलारनाथ जी के मंदिर में रहते है। अतः इस अवधि में यहाँ दर्शन करने से श्रीजगन्नाथ जी के दर्शन की फल प्राप्ति होती है।

श्रीक्षेत्र पुरी से ब्रह्मगिरि स्थित अलारनाथ जी के मंदिर की दूरी लगभग 35 से 40 कि.मी है। , श्री चैतन्य महाप्रभु (जीवन काल दिनांक 18.02.1486 से 14.06.1534 शताब्दी) जब श्रीजगन्नाथ धाम पुरी आये थे तब श्रीजगन्नाथ जी 'अनवसर' में थे। उनके दर्शन ना कर पाने की पीड़ा से श्री चैतन्य महाप्रभु बेसुध हो कर रोने लगे तब श्रीजगन्नाथ जी ने उन्हें बताया कि वह अलारनाथ नाथ धाम में उनके दर्शन कर सकते है। उनकी यह बात सुनकर श्री चैतन्य देव ने यहाँ आकर श्री विग्रह के दर्शन करके जब उन्हे साष्टांग प्रणाम किया तब उनके भक्तिभाव से संचारित शरीर के स्पर्श से मंदिर के चट्टान के पत्थर पिघल गए थे। बाद में गजपति प्रतापरुद्रदेव के आदेश पर इस पत्थर को श्री विग्रह के सामने से निकालकर मंदिर के बगल में श्री चैतन्य देव की एक षडभुजमहाप्रभु वाली प्रतिमा प्रतिष्ठित मंदिर में स्थापित किया गया है। यहाँ आने वाले सभी भक्तजन इसका दर्शन करके अपने आप को धन्य मानते है।

श्री अलारनाथ जी के मंदिर के आँगन में में थोड़ी पीछे की तरफ श्री महालक्ष्मी जी का मंदिर भी स्थित है। यहाँ श्री लक्ष्मीजी की लाल पत्थर में बनी भव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित है। सभी भक्तजन यहाँ आकर दर्शन करके थोड़ी देर बैठते है फिर श्रीलक्ष्मीजी से विदाई लेकर लौट जाते है। इस मंदिर के प्रवेशपथ के बामपार्श्व में भगवान भोलेनाथ का मंदिर भी स्थित है इस मंदिर के दक्षिणपार्श्व में भोगमंड़प भी संलग्न है। इस तरह अन्नप्रसाद भोग मिलता है साथ में चावल की खीर का एक विशेष भोग भी हर दिन मिलता है।

श्री अलारनाथ धाम के दर्शन करके हम चारों सहेलियां श्री क्षेत्र पुरी (श्री जगन्नाथ धाम) की और रवाना हो गई। रास्ते में वहा ब्रह्मगिरि में स्थित "बालिहरचंडी" के नामक देवी पीठ है। हम चारों उस स्थान के दर्शन करने चले गए। यहाँ श्री देवी माता का मंदिर होने के साथ-साथ यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल भी है। यहाँ दर्शन करने के बाद हम चारों श्री जगन्नाथ मंदिर की तरफ जाने लगे वहां नरेंद्र सरोवर के पास बने पार्किंग एरिया में गाडी खड़ी करके हम सभी श्रीमंदिर के भीतर जाने के लिए लाइन में खड़े हो गए। श्रीमंदिर के अंदर प्रवेश करके सर्वप्रथम दक्षिण पार्श्व में स्थित 'श्री पतितपावन जी" के दर्शन किये, फिर आगे बढ़ते हुए बाम पार्श्व में स्थित "श्री काशीविश्वनाथ" जी के दर्शन करके आगे बढ़ गए । श्री मंदिर की 22 सीढियों को पार करके फिर एक लाइन में खड़े हो कर इंतजार करने लगे, लगभग 20-30 मिनट प्रतीक्षा करने के बाद जब सभी लग जाने लगे तो हम भी सीढ़िया चढने लगे, वहां से श्रीमंदिर के अंदर प्रवेश करके थोड़ी दूर से वलभद्रजी, माँ सुभद्रा और श्री जगन्नाथ जी के दर्शन करने की कोशिश करने लगे,फिर जल्दी से लाइन में खड़े हो गए, वह दो चार लाइन भी लगभग आधा घंटे के बाद श्री मंदिर के अंदर पहुंची और हम सभी भीड़

को चीर कर भगवानजी के दर्शन करके धन्य हो गए। उस भीड़ में उनकी प्रसादी तुलसी मिलना मुश्किल होता है पर लगभग सभी भक्तजनों को मिलता जरुर है। फिर वहां हम लोग जैसे-तैसे भीड़ से बाहर निकल आये, इसके बाद हम सभी सहेलियाँ श्री मंदिर के आंगन में स्थित इक्यावन शक्तिपीठ में से एक शक्तिपीठ "श्री विमला माता के दर्शन किये, इसके बाद हम लोगो ने श्री लक्ष्मी जी के दर्शन किये। लक्ष्मीमंदिर में थोड़ी देर बैठने के बाद हम सभी 'आनंद बाजार" की तरफ गए और महाप्रसाद की एक एक थाली खरीदकर उसे पाने लगे। फिर वहां से उत्तर दिशा में स्थित गजद्वार से श्री मंदिर से बाहर आ गए।

इस प्रकार इस बार श्री जगन्नाथ प्रभु से हम चारों सहेलियों को उनके दर्शन की अभिलाषा को पूर्ण किया।

सबका साथ सबका विकास

श्रीमती ममता देवी
सहायक पर्यवेक्षक

भुवनेश्वर से छाताबरा जाने वाली सरकारी बस अरिसल चौक पर सुबह ग्यारह बजे तक पहुँच चुकी थी। मधु मास्टर अपना सामन लेकर जल्दी से बस से उतरे। चौक पर मौजूद पुराने बरगद के पेड़ के चबूतरे पर अपना बैग रखने के बाद उन्होंने चारों और देखा। शायद कोई साईकिल पर उनके गाँव की और जा रहा हो तो उन्हे अपना सामान गाँव तक ले जाने में थोड़ी मदद मिल जायेगी। उनका गाँव उस चौक से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर होगा। बढती उम्र में इतना दूर खुद चल कर जाना मुश्किल था, ऊपर से सामान भी था। मधु मास्टर ने उसे चौक के पास रोका और पूछा:

"बेटा,क्या तुम गाँव जा रहे हो ?"

"हां साहब।"

"क्या तुम मेरा सामान गाँव तक अपनी साइकिल पर लादकर ले जा सकते हो ?"

"ठीक है लाइए,मेरी साइकिल के पीछे वाले कैरियर पर रखकर थोडा हाथ लगा दीजिये नहीं तो ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर पहिया पड़ने से बैग नीचे गिर जायेगा।

बच्चा मधु मास्टर के साथ पैदल ही गाँव जाने के लिए निकल पड़ा। बच्चा साइकिल लेकर आगे-आगे चल रहा था और उसके पीछे-पीछे बैग पर हाथ रखे मधु मास्टर चल रहे थे। कुछ कदम चलने के बाद मधु मास्टर ने बच्चे से पूछा:

"बेटा तुम किसके बेटे हो ?"

"में दनेई प्रधान का बेटा हूँ, साहब। क्या आप मेरे पिताजी को जानते है?"

"हां में जानता हूँ। क्या तुम पढ़ते नहीं हो ?"

"हां साहब में अपने गाँव की स्कूल में पांचवी कक्षा में पढता हूँ।"

"और इस कड़ी धूप वाली दोपहर में स्कूल ना जाकर तुम कहाँ से आ रहे थे ?"

"आज साहब हमारे स्कूल की छुट्टी है इसलिए मैंने पिताजी का कहना मानकर राधू साहू दुकानदार को उसके बकाया पैसे देने गया था। आते हुए आपसे मुलाकात हो गई।"

"आज कैसे स्कूल की छुट्टी हो गई ? आज तो कोई ऐसा कारण नहीं जिससे स्कूल की छुट्टी हो जाए।"

"साहब, आप समझे ही नहीं। हमारे स्कूल में एक ही शिक्षक है। वह आज अपने संगठन के काम से भुवनेश्वर गए हैं। वहाँ कैन्टीन चौक पर उनके संगठन का आन्दोलन हो रहा है। सर नहीं होंगे तो स्कूल में कोन पढ़ायेगा? इसलिए उन्होंने स्कूल की छुट्टी कर दी और चले गए?"

"कब आयेंगे बताया है ?"

"नहीं साहब, बताया नहीं है, वह जब भी जातें है तो वापस आने की बात किसी को नहीं बताते। एक बार गए तो दो या तीन दिन जरुर रह कर आते हैं। उनका घर भुवनेश्वर में है ना।"

मधू मास्टर ने 33 साल प्राथमिक विद्यालयों में एक शिक्षक के रूप में कार्य किया था और पिछले साल अप्रैल महीने में हेडमास्टर के पद से सरकारी नौकरी से सेवानिवृत हुए थे। बच्चे की बात सुनकर उन्होंने सब कुछ अनुमान लगा लिया था। उन्होंने बच्चे से फिर से पूछा :

"अच्छा तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं।"

"साहब मेरा नाम लक्ष्मधर प्रधान है, गाँव में मुझे सब लखिया कहकर बुलाते है।"

"लखिया बताओ तुम्हारे स्कूल में कितने बच्चे पढ़ते है ?"

साहब मुझे मिलाकर कुल 24 बच्चे पढ़ते है।

ऐसे ही बातों-बातों में मधु मास्टर बच्चे के साथ चलते-चलते गाँव

के मुहाने पर पहुँच चुके थे। गाँव के मुहाने पर उनकी मुलाकात दनेई प्रधान से हो गई। दनेई ने अपने बेटे से पूछा:

"अरे लखिया तुम गुरूजी से कहाँ मिले ?"

"मैं रघु साहू को पैसे देकर लौट रहा था तब साहब चौक पर खड़े थे। उन्होंने पूछा कि क्या मैं उनका सामान गाँव तक अपनी साइकिल पर लादकर ले जा सकता हूँ ? मैंने कहा हाँ। तभी से मैं साहब के साथ आ रहा हूँ।"

"अरे तुम साहब किसे कह रहे हो, वह तो मेरे गुरूजी है। हमारे बचपन में हम इसी गाँव के स्कूल में हम उनके पास पढ़ते थे" रास्ते में बातों-बातों में उसे दनेई से पता चला कि स्कूल में पाँच कक्षाओं के लिए अब एक ही शिक्षक है। वह भी विभिन्न कामों में व्यस्त रहकर आधे से ज्यादा दिन स्कूल में अनुपस्थित रहते हैं। बाकि जितने दिन स्कूल आते हैं, उन दिनों वह मध्याह्न भोजन का हिसाब देखते देखते दिन ख़त्म कर देते हैं। इस गाँव के स्कूल के बच्चे मुर्ख हो गए हैं गुरूजी।

"ठीक है, तुम आज शाम को गाँव के सभी लोगों को मेरे घर आने को कहो। हम सब बैठकर इसका कोई उपाय सोचेंगे।" शाम होते-होते गाँव के सभी लोग मधु मास्टर के घर के सामने जमा हो गए। गाँव में बिजली के खंभे होने और बिजली की सभी व्यवस्थाएं होने के बावजूद भी हर दिन अँधेरे में रहता था। इसलिए ग्रामीण अपने हाथों में एक-एक लालटेन लेकर आये थे। मधु मास्टर ने यह स्थिति देखकर अपने एक सेवक को अपना पेट्रोमैक्स लाइट जलाने को कहा। खैर बहुत कोशिशों के बाद पड़ोसी के घर से कुछ मिटटी का तेल लाकर सेवक ने मधु मास्टर का पुराना पेट्रोमैक्स लाइट जलाया। लाइट को एक खम्बे से बांधकर सभी ने घर के सामने प्लास्टिक के बोरे की चटाई बिछाकर उस पर बैठ गए। मधु मास्टर गाँव के वयोवृद्ध व्यक्ति थे। वह हर ग्रामीण के लिए जाने-पहचाने व्यक्ति थे। नौकरी से सेवानिवृति के बाद बच्चों के विरोध के बावजूद उनका गाँव आना सुनकर सभी थोड़े हैरान हुए लेकिन खुश भी थे। आज मधु मास्टर साक्षात् उनके पास बेठे थे।

चर्चा शुरू करते हुए मधु मास्टर ने सबसे पहले गाँव के स्कूल के बारे में कुछ ग्रामीणों से जानना चाहा। उसी गाँव में रहने वाले मधु मास्टर ने एक सहपाठी मित्र अरविंद मिश्रा को कहने के लिए ग्रामीणों ने अनुरोध किया तो उन्होंने कहा: "समझ गए मधु, स्कूल की बात न ही कहें तो अच्छा है। तुमने इसी स्कूल से नौकरी शुरू की थी। वह समय अब नहीं है। यहाँ सिर्फ एक मास्टर पर अट्ठाईस बच्चे हैं। पाँच कक्षाओं के लिए दो ही कक्ष हैं। सभी कक्षाओं के बच्चे एक ही कमरे में बैठकर पढ़ रहे हैं। दुसरे कमरे में शिक्षक खुद बैठते है और मध्याह्न भोजन का सामान रखा रहता है। एक शिक्षक किस कक्षा के बच्चो को कितना समय दे पायेगा? इसलिए पढाई लगभग ना के बराबर होती है। बच्चे स्कूल जाकर मध्याह्न भोजन खाकर घर आ जाते है। इस विषय में हमने कई बार डी.आई और सी.आई महोदय को बताया है। बी.डी.ओ ने भी हमारे अनुरोध पर इस विषय में जिलाधिकारी सहित जन शिक्षा विभाग को लिखकर सूचित किया है। लेकिन अभी तक कोई बदलाव नहीं है। इस साल चार बच्चों के माता-पिता ने उन्हें भुवनेश्वर शहर के किसी सरकारी स्कूल में छोड़ा है। कितने दिन यहाँ रखकर बच्चों को मुर्ख बनायेंगे ? शायद बच्चे कम हो गए तो स्कूल भी बंद हो सकता है।

"जो तुमने कहा अरविंद, सब ठीक है। यह समस्या केवल हमारे गाँव की नहीं है। यह समस्या राज्य के सभी गाँवों में एक जैसी है। यह सच है कि इससे बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो रहा है। अगर सरकार कठोर कदम उठाती तो शायद कुछ हद तक इस समस्या का समाधान हो पाता। सब सरकार करेगी कहकर हम भी अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय कर दें, यह ठीक नहीं है।"

मैं अब गाँव में रहूँगा और खुद स्कूल जाकर बच्चों को पढ़ाऊंगा। तब हम शिक्षक की लापरवाही को रोक पाएंगे और हमारे बच्चे भी ठीक से पढ़ पाएंगे। लेकिन सभी ग्रामवासी इसमें मेरी सहायता करेंगे।

" किस प्रकार की सहायता तुम चाहोगे मधु? हम हर तरह से तुम्हारी सहायता करेंगे।"

अरविंद की अभय वाणी सुनकर मधु मास्टर ने कहा :

कल से गाँव के सभी बच्चे स्कूल पढने जाएंगे। मैं खुद स्कूल में उपस्थित रहकर उनकी पढाई की निगरानी करूंगा। शाम को बच्चे इसी जगह पर बैठकर फिर से शाम साढ़े आठ बजे तक पढ़ेंगे। ऐसा करने से शिक्षक बच्चों को पढ़ाने को बाध्य होंगे और बच्चे भी पढाई से जी नहीं चुरायेंगे।" ग्राम वासियों ने सामूहिक स्वर में मधु मास्टर की बातों पर सहमती व्यक्त की।

अगले दिन स्कूल में बच्चे भरे हुए थे। हाजिरी रजिस्टर के बाहर अतिरिक्त चालीस बच्चे स्कूल पहुँच चुके थे। मधु मास्टर भी स्कूल में उपस्थित थे। गाँव के स्कूल के लिए अभिभावकों में से चुने गए अध्यक्ष भी स्कूल पहुँच चुके थे। मधु मास्टर ने बच्चों को कक्षा के अनुसार अलग- अलग जगहों पर बिठाकर पढाई शुरू की। उस दिन लेकिन शिक्षक स्कूल नहीं आये थे। मधु मास्टर ने लखिया से सुना था कि सर एक वार भुवनेश्वर गए तो दो- तीन दिन तक नहीं आते। इसलिए उन्होंने इस बात को नजरंदाज कर स्कूल के वातावरण को संतुलित करने पर ध्यान दिया। सभी बच्चे मधु मास्टर द्वारा दिए गए पाठ्यक्रम की रूपरेखा को मन लगाकर ग्रहण कर रहे थे। स्कूल अध्यक्ष को लेकर मधु मास्टर ने स्कूल परिसर के भीतर मौजूद दो अधूरे स्कूल कमरों को साफ करवाने का इंतजाम किया। ग्राम वासियों ने

मिलकर परिसर को साफ सुथरा कर दिया।

अगले दिन स्कूल शिक्षक बड़े लापरवाह ढंग से स्कूल पहुंचे। स्कूल परिसर में अभूतपूर्व बदलाव देखकर उनके मन में खटका हुआ। वह कई सवालों में उलझ गए। मधु मास्टर को बच्चों को पढ़ाते देख उन्होंने मान लिया की शायद कोई नया प्रधानाध्यापक स्कूल में शामिल हुआ है। वह उनके पास गए उन्हे प्रणाम किया और अपना परिचय दिया। मधु मास्टर ने सभी बच्चों को खड़े होकर 'गुरूजी प्रणाम' कहने को कहा। बच्चो ने एक स्वर में 'गुरूजी प्रणाम' कहा और स्कूल के वातावरण को एक शैक्षिक माहौल में बदल दिया। मधु मास्टर ने शिक्षकों से उनकी अनुपस्थिति का कारण नहीं पूछा। उन्होंने अपनी नौकरी के दौरान सहकर्मियों से कई कारण सुने थे। लेकिन उन्होंने खुद शिक्षक को अपना परिचय दिया :

" शिक्षक महोदय मेरा नाम मधुसुदन दास है और मैं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय का सेवानिवृत प्रधानाध्यापक हूँ। मैंने पिछले साल सितम्बर महीने में सेवानिवृति ली है। इसी गाँव का निवासी हूँ। अब इसी गाँव में रहूँगा इसीलिए कल ही यहाँ पहुँचा हूँ आप अकेले पाँच- पाँच कक्षाओं को पढ़ाने में कठिनाई महसूस कर रहे है। यह जानकार मेने कल से आपको इस काम में सहायता करने का फैसला किया है। गाँव के लोग भी आपको सहयोग करेंगे। अगर आपको इसमें कोई आपत्ति है तो स्पष्ट बताएं, हम ऊपर से अनुमति लेने की कोशिश करेंगे।"

"नहीं सर, मुझे क्या आपत्ति होगी? सभी बच्चो का नाम हाजिरी रजिस्टर में दर्ज है। केवल अट्ठाईस बच्चे नियमित रूप से स्कूल आतें है। स्कूल को बचाने के लिए हमने अधिक उपस्थिति दिखाकर एक अतिरिक्त की नियुक्ति के लिए अनुरोध पत्र भेजा था। लेकिन गाँव के वार्ड सदस्य के पति ने जाकर डी.आई को सच्ची घटना बता दी तो मुझे स्पष्टीकरण तलब कर स्कूल बंद करने का नोटिस मिल चुका है।"

" तो वार्ड सदस्य के पति ने ऐसा क्यों किया?"

"वह स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बनना चाहते है। लेकिन उनका कोई बच्चा स्कूल में पढता था इसलिए वह अध्यक्ष नहीं बन पाए। इसलिए मुझे मध्याह्न भोजन का खाना बेचकर पैसे बाटने के लिए उकसा रहे थे। मेने इसका विरोध किया इसी कारण से बहुत उत्तेजित होकर ऐसा कर रहे हैं। हर महीने मेरे खिलाफ विभिन्न स्तरों पर दो शिकायतें भेजते है। कल में एक जांच के लिए डी.आई के न्यायालय में हाजिर हुआ था। मैंने अपने तबादले के लिए भी आवेदन कर दिया है।"

ठीक है, वह हम समझेंगे। आप उन सब की चिंता छोड़ दें और बच्चो की पढाई पर ध्यान दें। हम ग्रामवासी आपको पूरा सहयोग देंगे।"

कुछ दिनों बाद देखा गया कि स्कूल के वातावरण में बहुत बदलाव आ गया था। बच्चों में स्वच्छता, परिसर की स्वच्छता, नियमित पढाई आदि सभी दिशाओं में विकास की धारा दिखाई दी। कुछ दिनों बाद स्कूल विभाग के डी आई उसी स्कूल का निरिक्षण करनें आये। वह स्कूल का बदलाव देखकर आश्चर्यचकित रह गए। वह शिक्षक महोदय से मधु मास्टर के बारें में जानकर उनसे मिलने उनके घर आये। पिछले दो दिनों से अपनी अस्वस्थता के कारण वह स्कूल नहीं गए थे। डी आई ने मधु मास्टर को प्रणाम किया।

"क्या आप मुझे पहचान रहे हैं सर ? मैं विकास कानूनगो, मेरे पिताजी प्रदीप कानूनगो हैं।"

" हाँ हाँ पहचान रहा हूँ। एक समय घोड़ानाली प्राथमिक स्कूल में तुम मेरे सहकर्मी थे।"

"सर, में अब यहाँ डी आई के रूप में कार्यरत हूँ। आज स्कूल का निरिक्षण करने आया था।"

"क्या कुछ बदलाव देख रहे हो ? सब इन शिक्षक महोदय का काम है। हम ग्रामवासियों ने केवल उन्हे समर्थन एवं सहयोग दिया है। " विकास ने मधु मास्टर को नमस्कार किया और उस दिन गाँव से लोट गए। स्कूल बंद होने की संभावना दूर हो गई। उन्नत स्तर की पढाई के कारण उस वर्ष पाँचवीं कक्षा के दो बच्चे छात्रवृति के लिए चुने गए। वह स्कूल उस छेत्र के लिए एक उदाहरण बनना शुरू हो गया था। इस क्षेत्र में एक विशेष कारण सभी को आकर्षित कर रहा था। वहा कारण यह था कि अन्य सभी स्कूलों की तरह यह स्कूल भी बदहाल स्थिति में था लेकिन जब से ग्रामवासियों ने सहयोग कर बदहाल स्थिति से स्कूल को निकालकर अपनी अपनी जवाबदेही साबित की, तब से इसे एक आदर्श संस्थान का दर्जा मिल पाया तो फिर राज्य के अन्य स्कूलों के मामले में यह संभव क्यों नहीं ?

सिंड्रेला की कहानी

श्री आयुष्मान वर्मा
पुत्र- श्री राहुल कुमार वर्मा,

एक बार की बात है, सिंड्रेला नाम की एक लड़की अपनी सौतेली माँ और दो सौतेली बहनों के साथ रहती थी। बेचारी सिंड्रेला को दिन भर कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी ताकि बाकी सब आराम कर सकें। उसे ही हर सुबह अँधेरे और ठंड में उठकर आग जलानी पड़ती थी। वह खाना बनाती थी। वह खुद ही आग जलाती थी। बेचारी लड़की आग के पास पड़ी राख से खुद के कपडे गंदे कर लेती और कभी कभी तो अंगारों से जल भी जाती थी। उसकी दोनों सौतेली बहनें उसके राख से गंदे हुए कपडे देख कर हँसती थी। उन्होंने उसका नाम “कचरा” रख रखा था।

एक दिन, शहर में एक बड़ी खबर आई। राजा और रानी बहुत खुश थे क्योंकि वें राजकुमार के लिए दुल्हन ढूँढ़ रहे थे। उन्होंने एक पार्टी रखी और देश की सभी युवतियों को आने का न्योता दिया गया। जिनको भी ये न्योता मिला वे खुशी से झूम उठीं और सोचती की वे अपना सबसे सुंदर गाउन पहनेंगी, खूब सुंदर दिखेंगी और अपने बालों को और भी सुंदर बनाएँगी। शायद राजकुमार उन्हें पसंद कर लें!

सिंड्रेला से घर पर भी ये न्योता मिला था। उसकी सौतेली बहने बहुत खुश थी अब उसे और भी काम करना था। उसे अपनी सौतेली बहनों के लिए दो बिल्कुल नए गाउन बनाने थे।

"और जल्दी! अब क्या तुम्हारे गाउन राजकुमार की पार्टी के बाद बनेंगे " एक सौतेली बहन चिल्लाई।

"अगर गाउन अच्छा नही हुआ तो तुम्हारी खैर नहीं" दूसरी चिल्लाई।

सिंड्रेला ने कहा, " अगर में इसी में लगी रही तो मुझे मुझे अपनी ड्रेस और बॉल बनाने का समय कब मिलेगा?"

"तुम?" सौतेली माँ चिल्लाई। "किसने कहा कि तुम पार्टी में जा रही हो?"

"क्या हंसी है!" एक सौतेली बहन ने कहा।

"कचरा भी पार्टी में जाने के सपने देख रही है !" उन्होंने सिंड्रेला की ओर इशारा किया। सभी हँस पड़ीं।

सिंड्रेला सोचने लगी “ये सब मुझे इसी नजर से देखते है, लेकिन मैं ऐसी नहीं हूँ। अगर मुझे जाने का मौका मिलता तो मैं जरुर जाती।”

अगले दिन एक सुंदर गाड़ी उनके घर के दरवाजे पर आ पहुँची। सौतेली माँ और सौतेली बहनें झट से अंदर कूद गईं और गाडी चल पड़ीं।

"अलविदा, शुभकामनाएं!" सिंड्रेला ने पुकारा। लेकिन उसकी सौतेली माँ और सौतेली बहनों ने मुड़कर उसे देखा तक नहीं।

सिंड्रेला उदास हो गई और सोचने लगी उसने ज़ोर से कहा, "काश मैं भी पार्टी में जा पाती!"

अचानक, उसके सामने एक परी आ गई।

सिंड्रेला ने आश्चर्य से पूछा। "तुम कौन हो?"

परि से उत्तर दिया “मैं तुम्हारी परीमाँ हूँ, मुझे ईश्वर ने भेजा है, मैं तुम्हारी इच्छा जानती हूँ। और मैं उसे पूरा करने आई हूँ।"

सिंड्रेला ने कहा, " लेकिन मेरी इच्छा असंभव है।"

"माफ़ करना!" परीमाँ ने झुंझलाकर कहा। "क्या मैं यूँ ही अचानक प्रकट नहीं हो गई मेरे लिए कुछ भी असंभव नहीं। "

"अच्छा, मुझे लगता है कि तुम जानती हो कि मैं भी राजकुमार की पार्टी में पर जाना चाहती हूँ।" उसने अपने गंदे कपड़ों

की ओर देखा।

"तुम्हारे कपडे सचमुच बहुत गंदे हो रहें है बेटा," परीमाँ ने कहा।

सिंड्रेला ने कहा, "अगर मेरे पास पहनने के लिए कुछ अच्छा भी होता," तो भी मैं वहाँ नहीं पहुँच पाती।"

परि ने सिंड्रेला की बात पर बिना ज्यादा ध्यान दिए अपनी छड़ी उसके सिर पर थपथपाई।

सिंड्रेला तुरंत पूरी तरह से साफ़ हो गई। उसने एक खूबसूरत नीला गाउन पहन रखा था। उसके बाल एक सुनहरी पट्टी में बंधे हुए थे और वह बहुत खुबसूरत लग रही थी।

यह अद्भुत है!" सिंड्रेला ने कहा।

परिमाँ ने अपनी छड़ी फिर थपथपाई। फ़ौरन एक सुंदर गाड़ी सामने आ गई, जिसमें एक चालक और चार सफ़ेद घोड़े थे।

"क्या मैं सपना देख रही हूँ?" सिंड्रेला ने अपने चारों ओर देखते हुए कहा।

परीमाँ ने कहा "यह उतना ही सच है जितना सच हो सकता है लेकिन एक बात तुम्हें जाननी ज़रूरी है।"

सिंड्रेला - "वह क्या है?"

परिमाँ - "यह सब सिर्फ़ आधी रात तक ही चलेगा। आज रात, आधी रात को, यह सब खत्म हो जाएगा। सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा।"

सिंड्रेला - "तो मुझे आधी रात से पहले ही पार्टी छोड़ देनी पड़ेगी !"

"अच्छा विचार है, "मेरा काम हो गया।" और यह कहकर परीमाँ चली गई।

सिंड्रेला ने अपने चारों ओर देखा वह वहाँ सुंदर गाउन पहने, बालों में सुनहरी पट्टी बाँधे खड़ी थी। और उसके आगे उसका सारथी और चार घोड़े इंतज़ार कर रहे थे। वह गाड़ी में चढ़ गई और वे चल पड़े।

पार्टी में राजकुमार उदास था। रानी ने अपने बेटे से कहा, "तुम्हारे चेहरे पर इतनी उदासी क्यों है?" "अपने आस-पास देखो! इनसे बेहतर लड़कियाँ तुम्हें कहीं नहीं मिलेंगी।"

राजकुमार - "मुझे पता है, माँ, लेकिन मुझे कोई भी ऐसी नहीं लग रही जिसकी मुझे तलाश है "

तभी किसी ने सामने वाले दरवाज़े की ओर इशारा किया "ये कौन है?"

सबकी निगाहें घूम गई। सीढ़ियों से उतरती वो प्यारी युवती कौन थी? उसने अपना सिर ऊँचा किया हुआ था और ऐसा लग रहा था जैसे वो यहीं की हो। लेकिन उसे कोई नहीं जानता था।

राजकुमार उसे देखते ही खुश हो गया, उसे लगा कि जैसे उसकी तलाश ख़त्म हो गई। राजकुमार उसके पास गया और बोला – " आपका नाम क्या है ? मुझे आपसे मिलकर खुशी हुई क्या आप मेरे साथ डांस करना पसंद करेंगी"

सिंड्रेला ने झुककर कहा " मेरा नाम सिंड्रेला है मैं भी आपसे मिलकर प्रसन्न हूँ," ।

राजकुमार और सिंड्रेला डांस करने लगे। पार्टी में मौजूद बाकी युवतियाँ ईर्ष्या करने लगीं।

सिंड्रेला और राजकुमार बहुत देर तक एक दुसरे की आँखों में आँखे डालकर डांस करते रहे। अचानक सिंड्रेला की नजर घड़ी पर पड़ी।

वह चिल्लाई "ओह, भगवान !आधी रात होने वाली है।"

"मुझे जाना होगा!" सिंड्रेला ने कहा और वह सीढ़ियों की ओर दौड़ी और पार्टी से चली गई दौड़ते समय उसके पैर से एक चांदी का जूता निकल गया जो राजकुमार को मिला। राजकुमार सिंड्रेला से प्रेम करने लगा था। वह बहुत उदास हो जाता है। सोचता है की सिंड्रेला अब उसे नहीं मिली तो बह जी नहीं पायेगा और बहुत बीमार हो जाता है।

राजकुमार की पीड़ा रानी माँ से नहीं देखी जाती तो राजकुमार उन्हे सब कुछ सच- सच बता देता है। वह कहता है कि वह राज्य में सभी लड़कियां जो उस पार्टी में आई थी उनके पैर में उस चांदी के जूते को आजमा कर देखेगा ताकि वह उस लड़की को ढूंढ सके जिससे वह प्यार करता है।

जब राजकुमार सिंड्रेला के घर आता है, तो उसकी सौतेली माँ कहती है की मेरे दो बेटी है और ये जूता उनमे से एक का ही है। राजकुमार सिंड्रेला की दोनों चालाक सौतेली बहनें उसे पहनने की कोशिश करती हैं, पर वे उसमें फिट नहीं होता हैं।

राजकुमार कहता है कि तुम्हारे एक और बेटी नहीं है तो उसकी सौतेली माँ मना कर देती है लेकिन अचानक सिंड्रेला खुद बाहर आ जाती है वह फटेहाल होती है लेकिन राजकुमार उसे कुछ कुछ पहचानता है। जब सिंड्रेला चप्पल पहनती है, तो वह पूरी तरह फिट आती है, और वह अपनी दूसरा चांदी का जूता भी दिखाती है। राजकुमार बहुत खुश हो जाता है।

इस प्रकार राजकुमार सिंड्रेला को ढूंढ लेता है, और वे शादी कर लेते हैं, जहाँ उनका आनंदमय विवाह होता है और वे दोनों खुशी-खुशी अपना जीवन गुजारते है।

हिंदी पॉडकास्ट: एक नया युग, एक नई आवाज

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक

आज के डिजिटल युग में, जहाँ दृश्य (विजुअल) सामग्री का बोलबाला है, ऑडियो माध्यम एक बार फिर अपनी पहचान बना रहा है। इस पुनरुत्थान में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है पॉडकास्ट ने। पॉडकास्ट एक ऑडियो प्रोग्राम है जिसे इंटरनेट के माध्यम से सुना जा सकता है। यह रेडियो का एक आधुनिक और अधिक व्यक्तिगत रूप है, जहाँ श्रोता अपनी पसंद के अनुसार कभी भी और कहीं भी सामग्री का आनंद ले सकते हैं। हाल के वर्षों में हिंदी पॉडकास्ट ने भारत और विदेशों में रहने वाले हिंदी भाषियों के बीच अपनी एक खास जगह बनाई है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा, सूचना और विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच बन गया है।

पॉडकास्ट की दुनिया: उदय और लोकप्रियता- पॉडकास्ट की शुरुआत पश्चिमी देशों में हुई, लेकिन भारत में इसकी लोकप्रियता स्मार्टफोन और सस्ते इंटरनेट के आगमन के साथ तेजी से बढ़ी। हिंदी पॉडकास्ट की वृद्धि का मुख्य कारण यह है कि यह एक विशाल श्रोता वर्ग तक पहुँचने का सबसे आसान तरीका है। भारतीय श्रोता, जो लंबे समय से कहानियाँ, कविताएँ और ज्ञानवर्धक बातें सुनने के आदी हैं, पॉडकास्ट को एक परिचित और सुविधाजनक माध्यम के रूप में अपना रहे हैं। विभिन्न ऑडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने हिंदी पॉडकास्ट के लिए एक विशाल बाज़ार तैयार किया है, जिससे नए रचनाकारों को अपनी आवाज़ लाखों लोगों तक पहुँचाने का अवसर मिला है।

विषयों की विविधता: हर रुचि के लिए सामग्री- हिंदी पॉडकास्ट की सबसे बड़ी खासियत इसकी विषयगत विविधता है। यह सिर्फ एक तरह की सामग्री तक सीमित नहीं है, बल्कि हर तरह की रुचि को पूरा करता है।

कहानी और कथाएँ: हिंदी कहानियों के पॉडकास्ट बहुत लोकप्रिय हैं। 'स्टोरीटेलिंग' के इस माध्यम में लोग पुरानी लोक कथाओं से लेकर आधुनिक फिक्शन तक, विभिन्न प्रकार की कहानियों का आनंद लेते हैं।

शिक्षा और ज्ञान: कई हिंदी पॉडकास्ट विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक सामग्री प्रदान करते हैं। इतिहास, विज्ञान, दर्शन और व्यक्तिगत विकास जैसे विषयों पर चर्चा होती है। ये पॉडकास्ट उन लोगों के लिए बेहतरीन हैं जो चलते-फिरते कुछ नया सीखना चाहते हैं।

समाचार और करंट अफेयर्स: पॉडकास्ट समाचारों को अधिक गहन और विश्लेषणात्मक तरीके से प्रस्तुत करते हैं, जो पारंपरिक समाचार बुलेटिनों में अक्सर संभव नहीं होता। ये श्रोताओं को हर रोज़ की घटनाओं से अपडेट रखते हैं।

हास्य और मनोरंजन: मनोरंजन की श्रेणी में कॉमेडी और साक्षात्कार-आधारित पॉडकास्ट बहुत लोकप्रिय हैं। ये पॉडकास्ट श्रोताओं को हँसी-मज़ाक और हल्के-फुल्के अंदाज में जोड़ते हैं।

आध्यात्मिकता और प्रेरणा: भारत में आध्यात्मिकता एक महत्वपूर्ण विषय है। कई पॉडकास्ट धार्मिक ग्रंथों, ध्यान और जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रेरणादायक बातें साझा करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव- हिंदी पॉडकास्ट का प्रभाव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। यह एक सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति ला रहा है।

भाषा का संवर्धन: पॉडकास्ट हिंदी भाषा को एक आधुनिक और प्रासंगिक माध्यम के रूप में स्थापित कर रहे हैं। यह

युवाओं को हिंदी से फिर से जोड़ने का काम कर रहा है, जो अक्सर डिजिटल दुनिया में अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता: पॉडकास्ट ने स्वतंत्र रचनाकारों को एक ऐसा मंच दिया है जहाँ वे बेझिझक अपनी बात रख सकते हैं। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है और नए विचारों को सामने आने का मौका देता है।

श्रवण कौशल का विकास: लगातार सुनकर, श्रोताओं की भाषा की समझ और श्रवण कौशल (listening skills) में सुधार होता है। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो भाषा सीख रहे हैं।

लचीलापन और पहुँच: पॉडकास्ट श्रोताओं को उनकी व्यस्त दिनचर्या में भी सीखने और मनोरंजन का मौका देते हैं। लोग यात्रा करते समय, कसरत करते समय या घर का काम करते समय भी इसे सुन सकते हैं।

चुनौतियाँ और भविष्य- हिंदी पॉडकास्ट के बढ़ते कदमों के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती है monetization (पैसा कमाना) । कई रचनाकारों के लिए पॉडकास्ट से कमाई करना अभी भी एक संघर्ष है। इसके अलावा, तकनीकी जानकारी की कमी और गुणवत्ता बनाए रखने की चुनौती भी मौजूद है।

हालांकि, भविष्य उज्ज्वल है। जैसे-जैसे श्रोताओं की संख्या बढ़ेगी, विज्ञापन और सदस्यता-आधारित मॉडल भी विकसित होंगे। वॉयस असिस्टेंट और स्मार्ट स्पीकर का बढ़ता उपयोग भी हिंदी पॉडकास्ट के भविष्य के लिए शुभ संकेत है। यह उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले वर्षों में हिंदी पॉडकास्ट एक और भी महत्वपूर्ण और व्यापक माध्यम बन जाएगा, जो भारत की विविध भाषाओं और संस्कृतियों को एक साथ जोड़ेगा।

निष्कर्ष- भारत में पॉडकास्ट की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है और हिंदी पॉडकास्ट ने इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न श्रेणियों में कई पॉडकास्ट हैं जिन्होंने लाखों श्रोताओं का दिल जीता है। हिंदी के कई ऐसे पॉडकास्ट हैं जहां विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध और सफल लोगों के इंटरव्यू लिए जाते हैं, जिनमें कलाकार, उद्यमी, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक गुरु शामिल होते हैं। ये पॉडकास्ट दर्शकों को ज्ञान, प्रेरणा और व्यक्तिगत विकास से जुड़ी गहरी बातें प्रदान करते हैं। पॉडकास्ट का सरल और जिज्ञासु अंदाज़ श्रोताओं को जोड़ता है और उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सोचने के लिए प्रेरित करता है। कुछ हिंदी के पॉडकास्ट समसामयिक मुद्दों, राजनीति, समाज और संस्कृति पर हल्के-फुल्के और व्यंगात्मक अंदाज़ में चर्चा भी करते हैं। इनकी खासियत अनौपचारिक और दोस्ताना लहजा होता है। पॉडकास्ट की बेबाक राय श्रोताओं को हँसाती भी है और सोचने पर मजबूर भी करती है। इनके अतिरिक्त कहानियों की श्रेणी में कई हिंदी पॉडकास्ट आते हैं जो हिंदी साहित्य की कहानियों को ऑडियो फॉर्मेट में प्रस्तुत करते हैं। मुंशी प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टैगोर और अन्य महान लेखकों की कहानियों को इसमें सुना जा सकता है। श्रोताओं को पुरानी यादें ताज़ा करने और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का मौका मिलता है। ऐसे पॉडकास्ट उन लोगों के लिए बेहतरीन है जो साहित्य से प्रेम करते हैं, लेकिन पढ़ने का समय नहीं मिलता। इनमें कहानी कहने की शैली और बेहतरीन साउंड डिजाइन श्रोताओं को पूरी तरह से बांधे रखती है।

कुछ पॉडकास्ट व्यवसाय, मार्केटिंग, निवेश और व्यक्तिगत वित्त जैसे विषयों पर सफल लोगों से बातचीत करते हैं। ऐसे पॉडकास्ट युवाओं के बीच बहुत लोकप्रिय हैं क्योंकि यह उन्हें उद्यमिता और पैसे कमाने के बारे में व्यावहारिक और उपयोगी सलाह देते हैं। कुछ हिंदी पॉडकास्ट व्यक्तिगत वित्त और निवेश पर केंद्रित होते हैं। इसमें विभिन्न वित्तीय विशेषज्ञों के साथ बातचीत किया जाता है, ताकि श्रोताओं को अपने पैसे को बेहतर प्रबंधन करने में मदद मिल सके। ऐसे पॉडकास्ट उन लोगों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण संसाधन है जो अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहते हैं। ये पॉडकास्ट जटिल वित्तीय अवधारणाओं को सरल और समझने योग्य तरीके से समझाते हैं।

कुछ बच्चों के लिए भी हिंदी पॉडकास्ट हैं, जिसमें पंचतंत्र, जातक कथाओं और अन्य भारतीय लोक कथाओं को सुनाया जाता है। ये बच्चों को नैतिक मूल्यों और कहानियों के माध्यम से शिक्षा देते हैं। ये माता-पिता और बच्चों, दोनों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। ये मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी देते हैं और बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करते हैं। ये पॉडकास्ट विभिन्न विषयों और शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो यह दर्शाता है कि हिंदी पॉडकास्ट की दुनिया कितनी विविध और समृद्ध है।

हिंदी पॉडकास्ट सिर्फ एक तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन है। इसने हिंदी भाषा को एक नई आवाज़ और एक नया मंच दिया है, जहाँ लाखों लोग अपनी पसंद की सामग्री सुन सकते हैं, सीख सकते हैं और जुड़ सकते हैं। यह एक ऐसा माध्यम है जो हर दिन अपनी संभावनाओं को बढ़ा रहा है और भविष्य में भारतीय डिजिटल परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनने की क्षमता रखता है।

हिंदी से ही हर सवेरा है

श्री सिद्धार्थ गिरि

पुत्र- श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी से ही हर सवेरा है

हिंदी की हर बात निराली,
लगती हमको सबसे प्यारी।
स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, सब हैं,
जैसे बगिया में हों कलियाँ।
जब सुबह की पहली किरणें,
खिड़की से आकर मुस्काएँ।
"नमस्ते" से दिन शुरू होता,
मीठी बोली से मन भरता।
माँ की लोरी और कहानियाँ,
दादी की वो मीठी बातें,
सब हिंदी में ही होती हैं,
जिनसे जगमगाती हैं रातें।
हिंदी है भारत का माथा,
ये है गंगा-यमुना की गाथा।
कबीर, तुलसी की वाणी है,
गांधी का सपना है हिंदी,
आज़ादी का नारा है हिंदी।
देश को जिसने जोड़ा है,
वो दिलों का बंधन है हिंदी।
जब हम चलते हैं स्कूल को,
और पढ़ते हैं किताबों को,
शब्दों का है सागर गहरा,
हिंदी से ही हर सवेरा है।
"पानी" बोलो या "जल" बोलो,
"आसमान" बोलो या "गगन" बोलो,
हर शब्द में एक कहानी है,
जो हमारी निशानी है।
किसान जब हल चलाता है,
वो हिंदी में गीत गाता है।
मज़दूर जब काम करता है,
वो हिंदी में ही सोचता है।
बच्चों का पहला प्यार है हिंदी,
बुज़ुर्गों का सम्मान है हिंदी।
हर रिश्ते की डोर है हिंदी,
हर पल का ये शोर है हिंदी।

विदेशों में जब हम जाते हैं,
और हिंदी में बात सुनाते हैं,
तो सब कहते हैं "वाह!" क्या भाषा है,
ये तो भारत की परिभाषा है।
सरल है, सहज है और मीठी,
जैसे मिश्री की हो एक गोली।
तो आओ बच्चों, हम मिलकर,
हिंदी का मान बढ़ाएँगे।
हर जगह इसे फैलाएँगे,
भारत को फिर से सजाएँगे।
क्योंकि ये हमारी पहचान है,
हमारे दिल का सम्मान है।
हिंदी से ही हर सवेरा है,
हिंदी से ही हर शाम है।
ये हमारी संस्कृति का नाम है।

चिड़िया

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
पर्यवेक्षक

चिड़िया यादों की पुड़िया
आवाज से नींद खुल जाए,
चूं चूं करती दाना चुगे
पकड़ने जाऊं तो उड़ जाए।
गौरैया प्यारी बड़ी न्यारी
घर में बनाए घोंसला,
कैसे देखूं चूज़ों को उनके
बहुत है फिर भी फासला
तिनके तिनके से बनाएँ घर
उजड़ जाने का नहीं है डर
कमाल का है भाई हौसला।
नींद से जगाता है कौआ
कांव कांव का शोर करता है,
गाना गाती है कोयल जब ऋतु वसंत आती है।
जब आसमां में छाये बादल घनघोर
तब पंख उठाकर वन में नाचे मोर।
और है एक चिड़िया बहुत ही चुलबुल
कलगी है सर पर वह है बुलबुल।
वह भी बहुत अच्छा गाती है गाना,
पेड़ से डाली, डाली से पेड़ उसका आना-जाना।
तालाब में बतख हंस लगाते है मेला,
मछली पकड़ने एक टांग पर खड़ा रहता है बगुला।
सुबह- शाम नीले आसमान में
उड़ते है कितने परिंदे,
उड़ते उड़ते ही उनका शिकार
करते हैं बाज दरिंदे।
और है एक चिड़िया,
उल्लू है उसका नाम
दिन में नहीं देख पाता
रात में करता है काम।
और दो चिड़िया हैं,
नाम है तोता-मैना,
जिनकी कहानी सुनते-सुनते
बीत जाती है रैना।
और भी कितनी सारी चिड़ियाँ है संसार में,
जिनको बनाया है प्रकृति ने बड़े प्यार में।

छोटी-बड़ी सब चिड़िया जैसे
मिल कर कहते है सारे,
भले-बुरे हम सभी हैं
कुदरत की आँखों के तारे।
हम को अगर बचा पाओगे
तो रख पाओगे अपने को जिंदा,
क्योंकि विश्व शांति का प्रतीक है
ऑलिव डाली अपनी चौंच में
पकड़ा हुआ एक सफेद परिंदा।।

कर्म की उपादेयता

श्रीमती नीलम देवी
पत्नी- श्री संजीव कुमार यादव, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

इस श्लोक का अर्थ है कि तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, कर्म के फल पर नहीं। कर्म का फल क्या होगा, इस बारे में चिंता मत करो। कर्मफल का हेतु मत बनो और निष्क्रियता में आसक्त मत बनो।

मानव जीवन में जन्म से मरण तक कर्म की प्रधानता होती है। विश्व का प्रत्येक प्राणी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ न कुछ करता रहता है। हाँ, ये अलग बात है कि उसके द्वारा किए गए कर्म सार्थक हैं या निरर्थक। मानव जैसे ही परिपक्व अवस्था में पहुँचता है, उसे आभास हो जाता है कि उसे कौन सा कर्म करना चाहिए और कौन सा नहीं। तथापि अधिकांश लोग यह जानते हुए भी कि अमुक कर्म गलत है, माया के वशीभूत होकर उसे कर ही बैठते हैं।

विभिन्न घटनाओं और उनके परिणामों का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रायः देखा जाता है कि परिणाम आशा या अपेक्षा के अनुसार न प्राप्त हो, तो लोग भाग्य की बात करते हैं। और फिर वे नियति की अवधारणा को मानने लगते हैं। परंतु भाग्य है क्या? यदि वेदांत दर्शन का संदर्भ लें, तो हम भाग्य के स्थान पर प्रारब्ध की बात करते हैं, जो बहुत हद तक आशावादी है।

वेदांत तीन प्रकार के कर्मों की बात करता है: संचित, प्रारब्ध और भावी। संचित वह कर्म है, जो पिछले अनेकानेक जन्मों के संस्कारों से बने हैं। प्रारब्ध वह कर्म है जो संचित कर्मों का ही सक्रिय भाग है, जो इस जीवन में हमें भोगना है। भावी वह जो हम अपने विवेक से इस जीवन में करेंगे और जिनसे आगे के संसार निर्मित होंगे। संचित कर्म ज्ञानाग्नि द्वारा भस्म हो सकते हैं, परंतु प्रारब्ध हमारे लिए निर्धारित है।

जब हम कर्मों के इस मर्म को समझते हैं, तो हम अपने आगामी कर्मों को सजगता से करने लगते हैं, जिससे कार्यसंबंधी संस्कार परिवर्तित होने लगते हैं। इसलिए प्रारब्ध निराशावादी होकर दुखी होने के बजाए आशावादी होकर पुरूषार्थ की बात करता है।

किसी भी कर्म को सार्थकता देने के लिए धैर्य की विशेष आवश्यकता होती है। कहा जाता है कि सृष्टि में अंधकार और प्रकाश दोनों हैं। नकारात्मकता, विषमता, कठिन परिस्थितियां अंधेरी रात के समान हैं, तो कर्मठता, सदाचार, विवेक, ज्ञान, स्नेह, प्रेम, सद्भाव, आदि ऐसे आदर्श मार्ग हैं, जिन पर चलने से चतुर्दिक प्रकाश का आभास होने लगता है।

कर्मठ व्यक्ति की यह विशेषता होती है कि वह कठिन परिस्थितियों में बिना विचलित हुए उसमें से निकलने की योजना बनाता है। और वैसा व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में सकारात्मक विचार रखते हुए अपनी राह निकालता है। सांसारिक जीवन में मनुष्य तमाम आकर्षणों के चलते कुकर्म या निरर्थक कर्म करने को बाध्य हो जाता है। छल, ईर्ष्या-द्वेष, अहंकार तथा अन्य अनाचार के रास्ते पर चलकर व्यक्ति खुद के लिए विनाश का महल खड़ा कर लेता है, जिससे वह तनाव, क्रोध एवं भय के वातावरण में जीने लगता है।

सद्ग्रंथों में तमाम ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिसमें इंसान प्रारम्भ में अपने कुत्सित कर्म व आचरण के कारण समाज में कुख्यात हो जाता है। परन्तु, यदि बाद में उसे सच्चा पथ-प्रदर्शक मिल जाता है, तो वापस अपने अच्छे कर्म के प्रादुर्भाव से समाज में अपनी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित कर लेता है।

प्रत्येक इंसान को अपने कर्म की प्रधानता को उजागर करने के लिए आवश्यक रूप से अंतर्मन से संवाद करना चाहिए। संसार में व्याप्त माया के प्रभाव और विकारों से ग्रस्त मानव- मन प्रायः व्यथित होता रहता है। मन को शांत और आश्वस्त करने के लिए मनुष्य अपनी बुद्धि औरर विवेक के अनुसार विभिन्न उपाय करता है। दुख है, तो सुख प्राप्ति का प्रयास करता है। निराशा है, तो आशा का भाव दृढ़ करता है। रोग है, तो निरोग होने का प्रयास करता है। इस तरह मुष्य ने हर विषमता का एक विकल्प खोज लिया है, ताकि मन स्थिर हो सके। इन सभी सार्थक उपायों को बल देने में इंसान के वांछित कर्म ही मानसिक शांति प्रदान कर सकते हैं।

कर्म सिद्धांत जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है। कर्मों का फल अवश्य मिलता है, चाहे वह श्रेष्ठ हो या निकृष्ट। इससे छुटकारा पाना कठिन होता है। हमारे किए गए कर्म जीवन को एक न एक दिन अवश्य प्रभावित करते हैं। इसका अर्थ है कि हमारे कर्मों का फल हमें अवश्य मिलता है। कर्म ही पूजा है, क्योंकि कर्म ही मनुष्य को श्रेष्ठ या निकृष्ट बनाता है। इससे ही उसे सुख या दुख की प्राप्ति होती है। कर्मों से ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है। भगवान राम अपने कर्मों से महान बने और हनुमान और विभीषण जैसे पात्र भी अपने श्रेष्ठ कर्मों के कारण अनुकरणीय बने।

कर्म सकाम और निष्काम हो सकते हैं। सकाम कर्म वे हैं, जो फल की इच्छा से किए जाएं और निष्काम कर्म वे हैं, जो फल की इच्छा के बिना किए जाएं। जो लोग निष्काम कर्म करते हैं, वे कर्म से मुक्त होते हैं। कुल मिलाकर, कहा जा सकता है कि कर्म सिद्धांत जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और हमें श्रेष्ठ कर्म ही करने चाहिए, ताकि हमें श्रेष्ठ ही फल मिल सके।

जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं- कर्म, विश्वास और संबंध। इन तीनों पहलुओं पर बिना विवेक के नहीं चलना चाहिए। हमारे कर्मों के फल के कारण कभी विपरीत या अभावग्रस्त स्थिति बने, तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। अभावों के बीच आने वाली परिस्थितियों को स्वीकार कर लिया जाए, तो प्रभु कृपा से नए रास्ते बन ही जाते हैं। जब तक हम परिस्थितियों को, व्यक्तियों को, किसी भी फल को स्वीकार करना नहीं सीखेंगे, तब तक हम परेशान रहेंगे। हमारे मन की समस्या यह है कि मन आसानी से चीजों को स्वीकार नहीं कर पाता। इस समस्या का समाधान भी केवल मन ही है। अतः मन को काबू में लाने के लिए हमें कर्तव्यपरायण कर्म पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्म की परिभाषा 'योगः कर्मसु कौशलम्' है। अर्थात् कर्म में कुशलता ही योग है। कर्म को अध्यात्मिक अभ्यास बताया गया है, एवं कर्म को तीन प्रकार से उल्लेखित किया गया है:-

1. कर्म (कर्तव्य)- कर्म का अर्थ है- कार्य या क्रिया। यह शारीरिक, मानसिक या मौखिक रूप से किए गए वैसे कार्य को संदर्भित करता है, जो मानव जीवन के दैनिक क्रियाकलाप व सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक होता है।

2. अकर्म (अकर्मण्यता)- अकर्म का अर्थ है- निष्क्रिय रहना। अकर्म स्वभाव वाले व्यक्ति का निरंतर पतन होना स्वाभाविक है। वह अपने आप को नपुंसकता के राह पर धकेल देता है।

3. विकर्म (गलत कर्म)- इसका अर्थ है- गलत या निषिद्ध कर्म करना। इस कर्म को धर्म के विरूद्ध माना जाता है। ऐसे व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुँचाते हैं। अधर्म का आचरण करने वाले व्यक्तियों का कर्म विकर्म की श्रेणी में आता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में निष्काम कर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। निष्काम कर्म का अर्थ है- फल की इच्छा से रहित होकर जन-कल्याण के लिए कर्म करना। निष्काम कर्म को सार्थक रूप देने के लिए समर्पण भाव की नितांत आवश्यकता होती है। प्रकृति के नियमों को जीवंत रखने के लिए पृथ्वी के समस्त प्राणियों को अपने हिस्से का कर्म करना होता है।

भारत में चुनावी सुधार की आवश्यकता एवं महत्व

श्री संजीव कुमार यादव
वरिष्ठ अनुवादक

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने के साथ-साथ विश्व के सबसे सफल लोकतांत्रिक देश के रूप में जाना जाता है। भारत ने संवैधानिक रूप से सशक्त पंचायती राज प्रणाली और स्थानीय स्वशासन के साथ-साथ संघीय ढांचे वाली संसदीय प्रणाली को अपनाया है। भारत में शासन की सभी त्रिस्तरीय संरचना लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें स्पष्ट जनादेश वाली एक पार्टी या पार्टियों का समूह केंद्र, राज्य या पंचायती राज संस्थान/स्थानीय स्वशासन पर शासन करता है।

भारत का चुनाव आयोग, भारत का सर्वोच्च न्यायालय, राजनीतिक विश्लेषक, विशेषज्ञ समितियों/आयोगों और आम जनता ने चुनाव प्रणाली की कमियों से संबंधित कई मुद्दे उठाए हैं और उसमें आवश्यक सुधार के लिए सुझाव भी दिए हैं। भारत सरकार ने विधायी प्रयासों के माध्यम से, चुनाव आयोग ने प्रशासनिक प्रयासों के माध्यम से तथा सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान की विस्तृत व व्यापक सुझाव/व्याख्याओं के माध्यम से भारतीय चुनाव प्रणाली में कई सुधार प्रस्तुत किए हैं। हालांकि इस चुनाव प्रणाली में अभी भी कुछ कमियां है जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि इसे अधिक प्रभावी, कुशल और पारदर्शी बनाया जा सके।

चुनाव सुधार से तात्पर्य किसी देश में चुनावी प्रक्रिया की दक्षता, पारदर्शिता और निष्पक्षता को बढ़ाने के उद्देश्य से किये गए व्यवस्थित परिवर्तनों से है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि लोकतंत्र केवल इस विश्वास पर कार्य कर सकता है कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष हों तथा इसमें हेराफेरी या धांधली न हो। लेकिन कुछ कारणों से लोकतंत्र की व्यवस्था ठीक से काम नहीं कर रही है और आम जनता को लगता है कि चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ है। भारत जैसे लोकतंत्र में, चुनाव राजनीतिक वैधता और नागरिक भागीदारी की आधारशिला होते हैं। इसलिये, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना लोकतांत्रिक शासन को बनाए रखने के लिये मूलभूत आवश्यकता है।

भारतीय चुनाव प्रणाली की कमियां/कमजोरियां

भारत के चुनाव आयोग और राज्य निर्वाचन अधिकारियों के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद योग्य व्यक्ति नहीं चुने जाते हैं। इसका प्रमुख कारण है- वैसे अयोग्य व्यक्ति को चुना जाना जो धन और बाहुबल, जातिवाद, सांप्रदायिकता, राजनीति के अपराधीकरण, चुनावी हिंसा, बूथ केप्चरिंग आदि का सहारा लेकर चुनावी मैदान में विजय प्राप्त करते हैं। भारत में उम्मीदवार की जीत की क्षमता, राजनीतिक दलों की वैचारिक ताकत और उम्मीदवार के व्यक्तिगत गुणों पर भारी पड़ती है।

भारतीय चुनाव प्रणाली में कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे निम्नलिखित है।

1.धन शक्ति का उपयोग-

चुनाव लड़ने के लिए धन जैसे विशेष संसाधन की आवश्यकता होती है। कानूनी तौर पर प्रत्येक उम्मीदवार कानून के तहत स्वीकार्य राशि खर्च कर सकता है। लेकिन उम्मीदवारों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण कई उम्मीदवार गलत या अवैध तरीके से स्वीकार्य राशि से ज्यादा खर्च करता है, ताकि वह लोगों को लुभाकर चुनाव जीत सके। अधिकांश मामलों में मतदाताओं

को लुभाने के लिए (या तो नकद राशि या शराब की बोतलें) फिजूलखर्ची की जाती है। यह चुनाव की पूरी प्रक्रिया को दूषित करता है।

2.बाहुबल का उपयोग-

चुनावें में बाहुबल का प्रयोग लोकसभा के पहले तीन आम चुनावों और उसके बाद के कुछ राज्य विधानसभों के चुनावों तक छिटपुट था। लेकिन बाद में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों, जाति आधारित राजनीतिक दलों और उभरती सांप्रदायिक ताकतों के उदय ने चुनावों में बाहुबल को नया अर्थ दिया ताकि किसी भी तरह से चुनाव जीता जा सके। चुनाव पूर्व धमकी और बूथ कैप्चरिंग हर चुनाव का एक हिस्सा बन गया था। हालांकि तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन.शेषन और उनके अधिकारियों के प्रयासों से मतदान के दौरान अर्धसैनिक बलों की भारी तैनाती के माध्यम से लोकसभा और राज्यविधानसभों के चुनावों में बाहुबल के प्रयोग को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सका।

3.राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियों का राजनीतिकरण-

ये एक ही सिक्के को दो पहलू हैं और चुनावों में बाहुबल के प्रदर्शन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। अपराधियों का राजनीतिकरण एक ऐसी परिघटना है जहां अपराधी प्रभाव बढ़ाने और राजनीतिक संरक्षण प्राप्त करने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, धन कमाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके खिलाफ मामले हटा दिए जाएं या आगे न बढ़ाया जाए।

जबकि राजनीति का अपराधीकरण एक ऐसी परिघटना है जिसके तहत राजनीतिक दल अपराधियों को खुलेआम अपना नियमित सदस्य बना लेते हैं और उनकी जीत की संभावना को ध्यान में रखते हुए उन्हें चुनाव लड़ने के लिए टिकट देते हैं।

4.जाति और धर्म के आधार पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण-

भारत में ज्यादातर राजनीतिक पार्टियों का एकमात्र लक्ष्य होता है चुनाव जीतकर सरकार बनाना। उनके लिए यह बिलकुल मायने नहीं रखता कि उस जीत को पाने के लिए सही रास्ता चुने या गलत। कई पार्टियां जाति या धर्म विशेष के लोगों का वोट पाकर सरकार बनाने में सफल हो जाते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, आंध्रप्रदेश आदि कुछ राज्यों में जाति और धर्म के आधार पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण किया जाता है। हालांकि अब यह पूरे देश में फैल रहा है जो एक अच्छे लोकतंत्र का सबसे बड़ा दुश्मन है।

5.सरकारी तंत्र का दुरूपयोग-

प्रायः यह देखा जाता है कि जो सरकार शासन में होती है, वह बार-बार सरकारी तंत्र का दुरूपयोग करके चुनाव जीत जाती है। सरकार की राजनीतिक पार्टियां विभिन्न आयोगों एवं कार्यालयों में ऐसा दबाव बनाते हैं कि उनके कुकृत्यों का उजागर नहीं किया जाता है। भारत में सरकारी तंत्र का दुरूपयोग एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। इस समस्या से निजात पाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय एवं अन्य प्रमुख आयोगों को बिना किसी भेदभाव के निष्पक्ष निर्णय लेने होंगे।

6. मुफ्त की संस्कृति (फ्रीबीज)का उदय-

भारत में चुनाव के दौरान यह देखा जाता है कि जनता को लुभाने के लिए कई मुफ्त योजनाएं लागू करने का आश्वासन देते हैं जिससे कुछ जनता प्रभावित होकर उन्हें वोट दे देते हैं। हालांकि बाद में उन जनता को एहसास हो जाता है कि उनका ये फैसला गलत था। फ्रीबीज का यह कल्चर भारत के लगभग सभी राज्यों में फैल चुका है। इसे रोकने के लिए सर्वोच्च न्यायालय को विशेष पहल करनी चाहिए।

भारत में कुछ प्रमुख चुनाव सुधार -

- 61वें संशोधन अधिनियम, 1988 के द्वारा मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई। इससे अधिक युवाओं को चुनाव और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ।
- मतदान प्रक्रिया को आधुनिक बनाने के लिये ईवीएम का प्रयोग पहली बार 1998 में किया गया।
- बूथ कैप्चरिंग: बूथ कैप्चरिंग (जबरन कब्जा) होने पर चुनाव रद्द करने या रोकने के लिये विशेष कानून बनाए गए।
- फोटो पहचान-पत्र: फर्जी मतदान रोकने के लिये निर्वाचक फोटो पहचान-पत्र जारी करने की शुरुआत की गई।
- शराब की बिक्री पर प्रतिबंध: मतदान क्षेत्र में मतदान से 48 घंटे पहले शराब या नशीले पदार्थों की बिक्री या वितरण प्रतिबंधित है।
- निर्वाचन आयोग द्वारा अधिसूचित कुछ श्रेणियों के लोग अब डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान कर सकते हैं।

चुनाव सुधार से संबंधित कुछ समितियां-

- तारकुंडे समिति (वर्ष 1974): इसने सिफारिश की कि निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और भारत के मुख्य न्यायाधीश वाली समिति की सलाह पर की जानी चाहिये।
- दिनेश गोस्वामी समिति (वर्ष 1990): यह समिति भारत में चुनाव सुधारों का सुझाव देने के लिये गठित की गई थी। इसकी सिफारिशें वर्ष 1996 में लागू की गईं।
- वोहरा समिति (वर्ष 1993): इस समिति ने अपराध और राजनीति के बीच गठजोड़ की जाँच की।
- इंद्रजीत गुप्ता समिति (वर्ष 1998): इस समिति ने चुनावों के लिये राज्य के वित्त पोषण के विचार पर ध्यान केंद्रित किया।
- भारतीय विधि आयोग की 170वीं रिपोर्ट (वर्ष 1999): इस रिपोर्ट में भारत के चुनावी कानूनों में सुधार का सुझाव दिया गया।
- तन्खा समिति (वर्ष 2010): चुनाव कानूनों और चुनाव सुधारों की समीक्षा करने और उनमें बदलाव की सिफारिश करने के लिये गठित एक कोर समिति।
- भारतीय विधि आयोग की 255वीं रिपोर्ट (2015): इस व्यापक रिपोर्ट में भारत में चुनाव प्रक्रिया में सुधार के लिये विभिन्न चुनाव सुधारों का प्रस्ताव दिया गया।
- एक साथ चुनाव कराने पर उच्चस्तरीय समिति की प्रमुख सिफारिशें: पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के नेतृत्व में एक साथ चुनाव कराने की व्यवहार्यता की जाँच के लिये एक उच्चस्तरीय समिति गठित की गई थी।

निष्कर्ष- लोकतंत्र की मजबूत आधारशिला में चुनाव प्रक्रिया का अहम भूमिका है। अतः हम सभी भारतीयों को भारतीय निर्वाचन आयोग के द्वारा बनाए गए नियमों का अक्षरशः पालन करना चाहिए। साथ ही चुनावों की निगरानी के लिये मीडिया और नागरिक समाज का समर्थन करना चाहिये तथा सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिये राजनीतिक नेताओं हेतु नैतिक प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करना चाहिये। भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश को सुदृढ़ बनाने के लिए हम सभी को हरसंभव प्रयास करनी चाहिए।

कार्यालय से संबंधित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

कार्यालयीन आंतरिक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं की झलकियां

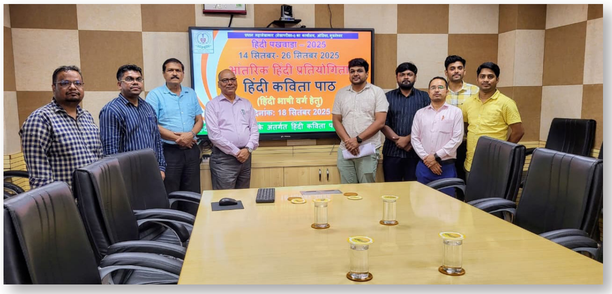

बच्चों हेतु आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं की झलकियां

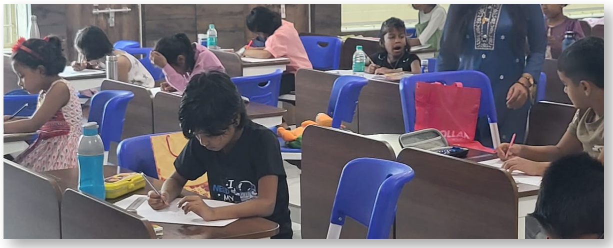

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक से संबंधित झलकियां

हिंदी कार्यशाला से संबंधित

कुमारी अदिति महान्ति

पुत्री : श्री सत्यनारायण महान्ति, वरिष्ठ लेखापरीक्षक